10023

श्री
...रसूरि
...दिर,
...नगर

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २७ अंक : ११ फरवरी : २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - ११, फरवरी, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute
Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.
Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. आचार्य हेमचन्द्रकी दृष्टि में- भारतीय समाज	डॉ. जयशंकर मिश्र	६११
२. सामायिक पाठ	श्रीमद् राजचन्द्रजी	६२६
३. श्रीचन्दराज चरित्र		६३८

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

मूल्य - ५.०० रूपये

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

आचार्य हेमचन्द्र की दृष्टि में भारतीय समाज

डॉ० जयशंकर मिश्र

कलिकाल सर्वज्ञ जैन आचार्य हेमचन्द्र अपने युग के प्रकांड पंडित और अप्रतिम विद्वान थे। १२वीं सदी के भारतीय साहित्य और संस्कृति के वे एकमात्र प्रतिनिधि थे। साहित्य और भाषाशास्त्र के विभिन्न विषयों के अतिरिक्त तर्कशास्त्र मीमांसा और इतिहास-संस्कृति के भी समान विचारक थे। चौलुक्य नरेश जयसिंह, सिद्धराज और कुमारपाल की राज्यसभा के ये अग्रणी और सर्वश्रेष्ठ साहित्यक थे। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाओं पर इनका समान अधिकार था अतः इन्होंने विभिन्न विषयों पर विभिन्न भाषाओं में रचना की। प्राकृत द्वयाश्रय और कुमारपालचरित, सिद्धहेमशब्दानुशान, छन्दोनुशासन, लिंगानुशासन, उणादिगणसूत्र, देशी नाममाला, अभिधानचिन्तामणि, त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित, योगशास्त्र, प्रमाणमीमांसा, अनेकार्थ संग्रह आदि उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों में इन्होंने साहित्य के विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं पर नए सिरे से विचार तो किया ही है, साथ ही तत्कालीन भारतीय समाज पर भी अपनी दृष्टि से यत्र-तत्र प्रकाश डाला है, जो तत्कालीन समाज-चित्रण की नवीन उपलब्धि है। आज तक हेमचन्द्र के भारतीय समाज-संबंधी

नोट— पूर्वमध्ययुगीन भारतीय समान की सांस्कृतिक अवस्था का अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में लिखे गए तत्कालीन साहित्यिक ग्रंथों और विदेशों यात्रियों के विवरणों के मूल का अध्ययन कर—प्रोफेसर डॉ० बुद्ध प्रकाश (अध्यक्ष, इतिहास विभाग, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, डायरेक्टर इंस्टीट्यूट आव इंडिक स्टडीज तथा डीन फैकल्टी अव आर्टस् कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब) ने सर्वप्रथम सम्यक्रूपेण विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जो पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से रिसर्च बुलेटिन के स्वतन्त्र पुस्तक रूप में Some Aspect of Indian Cul in the Eve of muslim Invasions शीर्षक से प्रकाशित है। उन्होंने अनेक ऐसे ग्रन्थों का उपयोग किया है जिन्हें इतिहासकारों ने अबतक उपेक्षित रखा था। उन ग्रंथों के उपयोग से विद्वान इतिहासकार ने तत्कालीन समाज पर नवीन प्रकाश डाला है जिससे तद्युगीन समाज पर विचार करने की प्रेरणा मिलती है तथा तत्त इतिहास के, एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होती है। प्रस्तु निबन्ध में उक्त पुस्तक से अनेक स्थलों पर सहायता ली गई है।

विवरण उपेक्षित से रहे हैं। यहां तक कि, डा० ए० के० मजुमदार ने अपने "चौलुक्याज़ आफ गुजरात" ग्रन्थ में, इस संबंध में, कुछ भी प्रकाश नहीं डाला है। प्रस्तुत निबन्ध में तत्संबंधी उल्लेखों का विश्लेषण और मूल्यांकन किया जा रहा है।

वर्ण-व्यवस्था— भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था का अस्तित्व प्राचीनतम है। ये वर्ण चार थे, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।[१] आचार्य हेमचन्द्र के समय में भी चार वर्ण थे।[२] इनका कथन है कि चार वर्ण में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं।[३] हेमचन्द्र के समय से कुछ पूर्व भारत की यात्रा करने वाले अरब लेखक अलबरुनी[४] (मृत्यु १०४८ ई०) ने भारत के इन्हीं चार वर्णों का उल्लेख किया है।[५] वस्तुतः ये चार वर्ण प्राचीनकाल से चले आ रहे हैं। इस वर्णव्यवस्था का प्रेरक तत्व निश्चय ही व्यक्ति का व्यवसाय और कर्म ही था, जिस पर समाज विश्लेषणों की दृष्टि थी। प्राचीन काल से चार वर्णों में विभाजित भारतीय जाति मध्ययुग में भी तदनुरूप ही थी। यद्यपि वर्ण-विभाजन में जन्मगत आधार का बीज कुल और वंश नाम से आ गया था, तथापि वर्ण-व्यवस्था में व्यक्ति के व्यवसाय और कर्म का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था।[६]

ब्राह्मण— हिन्दु समाज में ब्राह्मणों की स्थिति सर्वप्रमुख थी। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों में उनकी प्रधानता मान्य थी। प्राचीन धर्मशास्त्रों ने इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से मानी है।[७] कदाचित् इसी कारण

---

१. शतपथ ब्राह्मण, ५, ५, ४९, निरुक्त ३८, अपण्डक जातक भदंत आनन्द कौशल्यायन, प्रथम खंड, पृ० १३६, १९४१ पाणिनिः ब्राह्मणक्षत्रियविटशूद्राः वर्णानामानुपूर्वेण पूर्वनिपातः २/२/३४ वा०)

२. तत्वार एव वर्णाश्चातुर्वण्यम् सिद्धहैमशब्दानुशासन, ७/२/१६४ ।

३. चातुवर्ण्य द्विजक्षत्रवैश्यशूद्र नृणा भिदः अभिधान चिन्तामणि, ३/८०७।

४. अलबीरूनी का भारत प्रवास और भ्रमण—काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६६, अंक १, सं० २०१८, पृं० ६८-७८

५. तहकीक-मालिल्-हिंद, पृ० ५० (अनुवादक, संखाउ अलबीरूनीज इंडिया)

६. पूर्वमध्ययुगीन भारतीय वर्णव्यवस्था, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी जर्नल वर्ष ८, अंक १, पृं० २२३-३४, ६२

७. महा०, शांति०, ७२, १७-१८, ब्राह्मणः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्च द्विजसत्तमाः।
पादोरुपक्षः स्थलता मुखतश्च समुद्गताः।। विष्णुपुराण, १.६.६।

इनकी मर्यादापूर्ण सर्वोच्चता हिन्दू समाज में थी। आचार्य हेमचन्द्र का कथन है कि ब्राह्मण ब्रह्मा की संतान हैं।[८] यहां ब्रह्मा से उनका तात्पर्य हिन्दुओं के पौराणिक ब्रह्मा से नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक गुण-संपत्ति युक्त और सद्‌चरित्रता से विभूषित व्यक्ति ब्रह्मा के नाम से संबोधित किया गया है। अतः ब्राह्मण शब्द उनके लिए प्रयुक्त होता था।[९] हेमचन्द्र का दृढ़ मत है कि जो ब्राह्मण सद्‌चरित्रता, मनन शीलता आदि गुणों से रहित है तथा अपने मौलिक कर्तव्यों को त्याग कर आयुधजीवी (अर्थात् अस्त्र-शस्त्र से जीविकोपर्जन करता है) हो जाता है, वह मात्र नाम का ही ब्राह्मण होता है।[१०]

ब्राह्मणों के अन्य पर्यायवाची नामों में उन्होंने षट्‌कर्मा नाम भी दिया है।[११] शुक्र के अनुसार जो ज्ञान, कर्म, देवता आदि की उपासना देवता के आराधन में तत्पर, शांत, दांत और दयालु था, वही ब्राह्मण था।[१२] षट्‌कर्मों में ये कर्त्तव्य थे। १-वेद पढ़ना, २-वेद पढ़ाना, ३-यज्ञ करना, ४-यज्ञ कराना, ५-दान लेना, और ६-दान देना।[१३] अलबरुनी ने भी ब्राह्मणों के कुछ इसी प्रकार के कार्यों का निर्देश किया है। वह लिखता हैं कि ब्राह्मण के संपूर्ण जीवन में पुण्य के कार्य, दान देना है। वह निरन्तर पढ़े, यज्ञ करे[१४] तथा वेद को पढ़ाए।[१५] शुक्र का यह विकल्प है कि ब्राह्मण दांत (जितेन्द्रिय), कुलीन, मध्यस्थ (समबुद्धि), अनुद्वेगकारी (कोमल वचन) अटल, परलोक से भीरु (डरनेवाला), धार्मिक, उद्योगी और क्रोधरहित हो।[१६] हेमचन्द्र ने ब्रह्मतेज

८. ब्राह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः, सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७/४/५८।

९. अभिधान चिन्तामणि, ६, १४१९, लिंगानुशासन, पृ० १४२, पंक्ति २०।

१०. ब्राह्मणानाम्नि-यत्रायुधजीविनः काण्डस्पष्टा नाम ब्राह्मणाः भवन्ति। आयुधजीवी ब्राह्मण एवं ब्राह्मणक इत्यन्त। सिद्धहेमचन्दानुशासन, ७/१/१८४

११. अवदानं कर्म शुद्धं, ब्राह्मणस्तु त्रयीमुखः। भूदेवो वाडवो विप्रो द्वयग्राम्यां जाति-जन्मजाः वर्णज्येष्ठः सूत्रकण्ठः षटकर्मा मुखसम्भवः अभिधान चिन्तामणि, ३, १८११-११।

१२. ज्ञान कर्मोपासनाभिर्देवताराधनेरतः। शांतोदांतोदयालुश्च ब्राह्मणश्चगुणोः कृतः।।सुक्र०४।

१३. अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत ।। मनु० १.८८।

१४. तहकीकमालिल्‌हिंद, पृ० २६१।

१५. वही, पृ० २७०।

१६. दांतं कुलीनंमध्यस्थमनद्वेगकारस्थिरमं।
परत्रभीरुं धर्मिष्ठामुधुक्तक्रोधवर्जितम् ।। शुक्र० ४.४३६।

उन्हीं ब्रह्मणों में वर्तमान बताया है, जिनमें आध्यात्मिक बल है।[१७] अतः यह निर्विधादरूप से कहा जा सकता है कि समाज में ब्राह्मणों से सद्आचारण सद्व्यवहार, सद्वृत्ति और सद्भाव से निवास करने की अपेक्षा की जाती था। सभाश्रृंगार नामक ग्रंथ में ब्राह्मणों के लिए यह निर्देश किया गया है कि जो धोती और उत्तरीय धारण करे, सिर भद्र रखे तथा शिखा फहराए, भाल पर तिलक लगाए, गायत्री मंत्र का जप करे, दिन में तीन बार संध्या करे, प्रातः स्नान करे, वेद पढ़े, वेदान्त का ज्ञाता हो, सिद्धान्त पर चर्चा करे, देव, गुरु, ऋषि और मित्र का तर्पण करे, वही नैष्ठिक ब्राह्मण है।[१८] इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि उपरिलिखित निर्देशों के विपरीत चलने वाला प्रकृततः ब्राह्मणों की श्रेणी में नहीं आता था। ऐसा लगता है कि हेमचन्द्र के काल में ब्राह्मण अपने स्वाभाविक कर्त्तव्यों से विमुख होने लगे थे तथा विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में रुचि लेने लगे थे, इसी लिए हेमचन्द्र ने उन्हें केवल नाम का ब्राह्मण कहा है और उनके ब्राह्मणेतर कर्त्तव्यों की भर्त्सना की है। हेमचन्द्र स्वयं कहते हैं कि कलिंग में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा नहीं है।[१९] इस अप्रतिष्ठा का कारण अपने कर्तव्यों से च्युत होना तो है ही, साथ ही उनकी वैमनस्यता भी है।[२०] वे एक दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति द्वेष-भाव रखते थे, क्यों कि हेमचन्द्र ने ब्राह्मणश्रमणम् का उदाहरण देकर उनके मनोमालिन्य का संकेत किया है।

ब्राह्मणों को प्राचीनकाल से कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त थे, जो राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और बौद्धिक सभी प्रकार के थे। इस युग में भी ब्राह्मणों को ऐसी सुविधाएं प्राप्त थीं, जिससे वे समाज में अन्य वर्णों

---

१७. सूत्र-ब्रह्मवर्चसम - सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७/३/८३।

१८. उत्तरासंग धोती, सऊतरिऊ जनोइ, हाथि प्रबीती,
सिरु भद्रियउं, सिखा फरहरती, तिलकु वधारियउ,
गात्री सारु, त्रिकाल संध्याराधनु, प्रभात स्नानु, नित्यदानु।
वेद पढ़ाई, वेदान्त जाणाइ, सिद्धान्त बखाणइ,
देव तर्पणु, गुरु तर्पणु, ऋषु तर्पणु, पितृ तर्पणु,
इसउनैष्टिकु ब्राह्मणु। सभाश्रृंगार शब्दानुशासन का० ना० प्र० सभा, पृ० १४८।

१९. न कलिंगेषु ब्राह्मण महत्तमम् सिद्धहेमशब्दानुशासन, ५/२/११।

२०. नित्यवैरस्य, वही, ३/१/१४१।

की अपेक्षा श्रेष्ठ समझे जाते थे। प्रोफेसर डाक्टर बुद्ध प्रकाश ने आचार्य हेमचन्द्र का उद्धरण देते हुए ब्राह्मणों की विशेष सुविधाओं प्राणदंड, शारीरिक दंड आदि की समीक्षा की है।[२१]

ब्राह्मणों को आपत्तिकाल में जब कर्तव्य से च्युत होना पड़ता था, तब उन्हें पोषण के लिए ब्राह्मणोत्तर व्यवसाय अपनाना पड़ता था। इस तरह के आपत्तिकालिक कर्मों का निर्देश भारतीय धर्मशास्त्रकारों ने किया है। ऐसी अवस्था में इतर कर्म को ग्रहण करने वाला ब्राह्मण केवल नाम का ब्राह्मन होता था, कर्म से वह ब्राह्मण नहीं होता था। आपत्तिकाल में ब्राह्मण 'आयुधजीवी',[२२] 'व्यापारोपर्जवी'[२३] तथा ब्याजोपजीवी हो सकता था।[२४] किन्तु आचार्य हेमचन्द्र ने ब्राह्मणों का इतर कर्म निंद्य माना है और सामाजिक दृष्टि से अनुचित निर्दिष्ट किया है। उनका मत है कि जो ब्राह्मण सोम का विक्रय करता है वह निंदनीय है।[२५] निश्चय ही आचार्य हेमचन्द्र का विचार ब्राह्मणों के प्रति तटस्थ-सा है। उनके विचार से प्रत्येक वर्ण को अपना कर्म करना चाहिए। किन्तु इसी युग के कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि ब्राह्मण विभिन्न कर्मों को करते थे। ब्राह्मण मंत्री होते थे,[२६] नगर प्रमुख होते थे,[२७] दंडनायक होते थे,[२८] मूर्तिकार होते थे,[२९] अभिलेखों के रचयिता होते थे।[३०] वे राष्ट्र और राजा की रक्षा अपनी सलाह देकर करते थे।[३१] विक्रम संवत् १२१३ के कुमारपाल के नाडौल अभिलेख में उसके मंत्री का नाम वहड़देव लिखा है, जो संभवतः उसके प्रारंभिक राज्यकाल में उदयन का पुत्र था। वह दंडाधिपति के साथ साथ महामात्य भी था।[३२]

---

२१. Buddha Prakash : Some Aspects of Indian Culture on the Eve of Muslim Invasions, P. 39.

२२. EI., II, 30 1.

२३. मनु० १०.८९।

२४. कृत्यकल्पतरु, गृहस्थकांड, २१४-२१।

२५. शब्दानुशासन, ५/९/१५९।

२६. राजतरंगिणी, ८, १०८, BI. 3,32; IHQ., XV, p. 581.

२७. राजतरंगिणी, ७. १०८।

२८. EI., II, 30 1.

२९. बकुलस्वामी (गिरनार अभिलेख, RLARBP., 322)

३०. कमोली प्लेट में मनोरथ, EI., II, 394; सोमेश्वर गुजरात में EI., I, 31; चालुक्य भीम द्वितीय के अन्तर्गत माधव EI., XV, 57.

३१. EI., I, p. 293.

३२. रासमाला, अत्याय १३, पृ० २३१।

हेमचन्द्र ने विभिन्न प्रदेशों के ब्राह्मणों के लिए उस प्रदेश के नाम के साथ उनको संबोधित किया है, जैसे सौराष्ट्र में निवास करने वाले ब्राह्मण सौराष्ट्रिक अथवा सुराष्ट्र ब्राह्मण कहे जाते थे, अवंति में निवास करने वाले अवंति ब्राह्मण से जाने जाते थे तथा काशी देश में बसने वाले काशी ब्राह्मण से अभिहित थे।[३३] पांचाल ब्राह्मणों का भी उल्लेख हेमचन्द्र ने किया है[३४] अतः हेमचन्द्र द्वारा दिए गए, विभिन्न प्रदेशों के ब्राह्मणों के इन उल्लेखों से उनकी व्यापकता और उनका विस्तार प्रकट होता है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि उन प्रदेशों के ब्राह्मणों का समाज में उत्कृष्ट स्थान था।

क्षत्रिय— राजनीतिक दृष्टि से क्षत्रियों का महत्व हिन्दू समाज में प्रमुख था। समाज के परिपोषण और रक्षण में उनका अभूतपूर्व योग था। देश और जनता की व्यवस्था का रक्षात्मक और निर्देशात्मक भार क्षत्रिय समुदाय पर था। मध्यकाल में ही नहीं, प्राचीनकाल में भी जब-जब देश पर शत्रुओं का आक्रमण हुआ, क्षत्रियों ने एकनिष्ठता और साहस के साथ देश और प्रजा की रक्षा की। अतः शूरता और वीरता की दृष्टि से क्षत्रियों का मान समाज में ब्राह्मणों की अपेक्षा कम नहीं था। नवीं शती के अरबी लेखक इब्नखुर्दाज्बा ने लिखा है कि क्षत्रियों के सम्मुख सभी सिर झुकाते हैं, लेकिन वे किसी को सिर नहीं झुकाते।[३५] इस कथन से इतना स्पष्ट है कि उनका समाज में आदरात्मक स्थान था।

हेमचन्द्र ने क्षत्रिय शब्द को क्षत्र शब्द से व्युत्पन्न इय प्रत्यय के साथ जाति अर्थ में प्रयुक्त होना बताया।[३६] किन्तु लक्ष्मीधर ने क्षत्रिय शब्द को क्षत्रात्वाणम से निःसृत माना है।[३७] क्षतात्त्राणम, अर्थात् उनका कर्म था अन्य तीन वर्णों के लोगों की हानि अथवा भय से रक्षा करना। हेमचन्द्र ने क्षत्रिय और राजन् शब्द पर विचार करते हुए लिखा है कि क्षत्रिय जाति के

---

३३. सुराष्ट्रे ब्रह्मा सुराष्ट्रः यः सुराष्ट्रे वसति स सौराष्ट्रिको ब्राह्मण इत्यर्थः एवमवन्ति ब्राह्मणः काशि ब्राह्मणः- सिद्धहेमशब्दानुशासन, ७/३/१०७।

३४. पंचालस्य ब्राह्मणस्य राजा पांचाल पंचालस्य ब्राह्मणस्यापत्यं वा पांचालः वही, ६।१ ११४

३५. किताबुल-मसालिक-वल् ममालिक, पृ० ७१, लीडन, १८८९।

३६. क्षत्रादित्यः क्षत्रस्यापत्यं क्षत्रियः जातिश्चेत सिद्धहेमसब्दानुशासन, ६। १। ९३।

३७. कृत्यकल्पतरु, गृहस्थ०, पृ० २५२।

अभिषिक्त व्यक्ति राजन् के नाम से अभिहित थे और क्षत्रियेतर जाति के प्रशासक व्यक्ति राजन्य के नाम से संबोधित किए जाते थे।[३८] यही नहीं, हेमचंद्र ने संघीय शासन में भाग लेने के अधिकारी क्षत्रिय कुल के व्यक्तियों को भी राजन्य नाम दिया है।[३९] अतः इस विवेचन से स्पष्ट है कि क्षत्रिय वर्ण के अंतर्गत राजन् और राजन्य दोनों आते थे।

कर्म की दृष्टि से क्षत्रियों का कर्म अत्यन्त महत्वपूर्ण था। शुक्र के अनुसार जो लोक की रक्षा करने में दक्ष, वीर, दांत, पराक्रमी और दुष्टों को दंड देने वाला हो, वही क्षत्रिय है।[४०] आचार्य हेमचन्द्र ने क्षत्रियों की शूरता को ही पुरुषार्थ माना है।[४१] ऐसा लगता है हेमचन्द्र ने क्षत्रियों के पुरुषार्थ के अन्तर्गत सभी कर्मों को निहित कर लिया। हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती सम्राट् भोज की यह व्यवस्था है कि जो वीर, उत्साही शरण देने और रक्षा करने में समर्थ, दृढ़ और विशाल शरीर वाले थे, वे संसार में क्षत्रिय हुए। उनका काम ब्राह्मणों के लिए निर्दिष्ट कार्यों के अतिरिक्त विक्रम, प्रजा की रक्षा, उनके भाग आदि का प्रबन्ध और व्यवस्था करना था।[४२] अतः हेमचन्द्र द्वारा निर्दिष्ट क्षत्रिय वर्ग के पुरुषार्थ का भाष्य भोज के उपरिलिखित कथन से भले प्रकार हो जाता है। एक स्थल पर आचार्य हेमचन्द्र ने क्षत्रियों के पांच नाम दिए हैं, जो उस प्रकार हैं— क्षत्रिम्, राजा, राजन्य और बाहु संभव।[४३] लेकिन इतना अवश्य है कि क्षत्रिय वर्ग का मुख्य कार्य प्रजा और शासन की देखभाल करना था। इस सम्बन्ध में अरबयात्री अलबरूनी का कथन युक्तियुक्त है :— क्षत्रिय वेद को पढ़ता है पढ़ाता नहीं। वह यज्ञ करता है, पुराणों के नियमानुसार आचरण करता है। वह प्रजा पर शासन करता है और उनकी रक्षा करता है। क्योंकि वह इसी निमित्त पैदा किया गया हैं।[४४]

३८. जातौ राज्ञः— राजन् शब्दादपत्यै जातौ गम्यमानायां यः प्रत्ययो भवति, यथा— राज्ञोऽपत्यं राजन्यः क्षत्रियजातिश्चेत्। राजनोऽन्यः।—सिद्धहेमशब्दानुशासन, ६।१।९२।

३९. राजन्यादिभ्योऽकञ्—वही, ६।२।६६।।

४०. शुक्र०, १.४१।

४१. क्षत्रियः पुरुषाणां पुरुषेणु वा शूरतम्—सिद्धहेमशब्दानुशासन, २।२।१०९।

४२. येतु शुरा महोत्साहाः शरण्या रक्षण क्षमाः।। दृढ़व्यायत देहाश्च क्षत्रियास्तु इहाभवन्। विक्रमोलोकसरक्षा विभागो व्यवसायिता।। समरांगणसूत्रधार, ७. ११-१२।

४३. क्षत्र तु क्षत्रियों राजा, राजन्यो वाहुसंभवः ।। अभिधानचिन्तामणि, ३.८६३।

४४. तहकीक-मालि-हिंद, पृ० २७४।

आचार्य हेमचन्द्र ने विभिन्न प्रदेशों में रहने वाले क्षत्रियों को प्रदेश नाम के साथ जोड़कर नवीन नाम दिया है। उनके अनुसार मगध में मागध जाति के क्षत्रिय वास करते थे।[४५] इसी प्रकार यौधेय, मालव, पांचाल आदि जाति के क्षत्रिय उस प्रदेश में बसते थे। हेमचन्द्र ने इक्ष्वाकु वंश के क्षत्रियों को आदि क्षत्रिय माना है।[४६] भोज परमार के नाम पर मालवा के परमार क्षत्रियों को इन्होंने भोजवंशजा माना है।[४७] किन्तु, सभाश्रश्रृंगार नामक ग्रंथ से राजपूत क्षत्रियों के छत्तीस वर्ग मिलते हैं। जो इस प्रकार हैं : परमार, राठौर चौहाण, (चौहान या चाहमान), गहिलोत (गिहलोत) दहिया, सेणचा, बोरी, बगछा, सोलंकी, सीसोदिया, खेरमारी, नाकुंभ, गोहिल, चावड़ा, झाला छूर, कागवा, जेठवा, रोहर, वस, बोरड़, खीची, खरवड़, डोडिया, हरिअड़, डाभी, तंअर, कोरड़, गौड, मकवाड़ा, यादब, कछवाहा, भाटी, सोनिगरा, देवड़ा, चंद्रावत।[४८] ये छत्तीस, राजकुल थे जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में निवास करते थे।

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि हेमचन्द्र के समय क्षत्रियों का प्रधान कर्म पूर्व-निर्दिष्ट था तथा देश के विभिन्न भागों में वास करने से उनके विभिन्न नाम हो गए थे, जो कालांतर में जाकर अनेक श्रेणियों में हो गए तथा उसी प्रकार उनके नाम भी परिवर्तित हो गए।

वैश्य— भारतीय समाज में राष्ट्र की अर्थ-नीति व्यापार-प्रणाली का सर्वथा भार वैश्यों के हाथ था। देश और समाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ और सुसंगठित बनाने के लिए वैश्य वर्ग को नियोजित किया गया था। अतः राष्ट्र के आर्थिक व्यवहार का संचालन वैश्य करते थे।

आचार्य हेमचन्द्र ने वैश्य के लिए अर्य शब्द का प्रयोग किया हैं।[४९] उनका यह शब्द प्रयोग पाणिनि के आधार पर है। पाणिनि ने भी वैश्य के लिए अर्य व्यवहृत किया है।[५०] ऐसा प्रतीत होता है कि हेमचन्द्र ने पाणिनि के

---

४५. मगधानां राजा, मगधस्यापत्यं वा मागधः— सिद्धहेमशब्दानुशासन, ६।१।११६।

४६. इक्ष्वाकुः आदि क्षत्रियः —उणादिसूत्रवृत्ति, ७५६।

४७. भोज्या—भोजवंशजा क्षत्रियाः—सिद्धहेमशब्दानुसान, २।४।८१।

४८. सभाश्रृंगार, पृ० १४९।

४९. स्वामिवैश्येऽर्यः—सिद्धहेमशब्दानुशासन, ५।१।३३।

तत्संबंधी सूत्र को थोड़े परिवर्तन के साथ गृहीत कर लिया। हेमचन्द्र ने वैश्यों के छः नाम दिए हैं। अर्या, भूमिस्पर्शः, वैश्या, ऊरव्या ऊरुजाः और विशः।[५१] इस प्रकार स्पष्ट है कि हेमचन्द्र के काल तक वैश्यों के लिए उपरिलिखित छहों नाम प्रचलित थे।

वैश्यों का प्रमुख कार्य था, पशुओं की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, ब्याज लेना और खेती करना।[५२] इस सम्बन्ध में हेमचन्द्र का कथन है कि वाणिज्य, पशुपालन और कृषि वैश्यों की प्रधान वृत्तियां हैं।[५३] उन्होंने इनके छह आजीविका का भी निर्देश किया है, जो इस प्रकार है आजीव, जीवनम, वार्त्ता, जीविका वृत्ति और वेतन।[५४] अलबीरूनी का कथन है कि वैश्य का धर्म है कि खेती करे, भूमि को जोते, पशु पाले और ब्राह्मणों की आवश्यकता को पूरी करे।[५५] वैश्यों के व्यापार करने का निर्देश अलबरूनी ने नहीं किया है। अलबरूनी के पूर्ववर्ती अरबलेखक इब्नशुर्दाज्बा ने वैश्यों को कारीगर और घर-गृहस्थी के कार्यों में निपुण बताया है।[५६] हेमचन्द्र से कुछ ही पहले होने वाले अरबलेखक अल-इदरीसी ने वैश्यों को कला-कौशल में निपुण तथा मिस्त्री निर्दिष्ट किया है।[५७] अतः स्पष्ट है कि आचार्य हेमचन्द्र के काल तक आते-आते वैश्यों के कर्मों में काफी परिवर्तन होता गया। केवल व्यावसायिक कार्य से ही वे सम्बद्ध थे।

हेमचन्द्र ने व्यापार करने वाले वैश्यों को आठ प्रकार का बतलाया है : वाणिजः, वणिक :, क्रयविक्रयिक पव्याजीवी आपणिक नैगम क्रयिक, और क्रयी।[५८] वस्तुएं खरीदने वालों को उन्होंने तीन नाम दिये हैं, क्रायक,

---

५०. अर्यः स्वामि वैश्ययो–पाणिनि०, ३.१०.१०३।
५१. अर्या भूमिस्पशों वैश्या, ऊरव्या ऊरजा विशः–अभिधान चिन्तामणि, ३.८६४।
५२. मनु० १९०. को० अ०, १.३७, शुक्र० १.४२।
५३. वाणिज्यं पाशुपाल्यं च, कर्षण चेति वृत्तयः। अभिधान चिन्तामणि, ३.८६४।
५४. आजीवो जीवनं वार्त्ता, जीविका वृत्ति वेतन-वही, ३.८६५।
५५. तहकीक–मालिल् –हिंद, पृ० २७१।
५६. E., Vol. II, p. 16.
५७. Ibid., p. 76.
५८. सत्यानृतं तु वाणिज्यं वाणिज्या वणिजो वणिक।
क्रयविक्रयिकः पण्याजीवाऽऽपणिकनैगमाः।। अभिधानचिन्तामणि, ३.८६७।

क्रयिक और क्रयी।[५९] इसी तरह तीन नाम वस्तुएं बेचने वाले को भी दिये हैं : विक्रायक, विक्रयिक और विक्रयी[६०]।

डॉ० अल्तेकर[६१] और धुर्ये[६२] का मत है कि वैश्य कालान्तर में शूद्र की स्थिति तक आ गए। किन्तु हेमचन्द्र के उपरिलिखित विवरण के विवेचन से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि मध्य काल में वैश्यों की स्थिति शूद्रों के समानान्तर नहीं थी, बल्कि प्राचीन काल से उनका जो स्थान समाज में था, वह अब भी था। अंतर केवल एक बात का था, वह यह कि उनको प्राचीन काल में जो अधिकार वेद पढ़ने का था, वह इस काल में सम्भवतः आबद्ध सा हो गया था, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनकी अवस्था शूद्रों के समकक्ष थी। भारतीय ग्राम विभिन्न जाति के लोगों के आवास से सर्वथा परिपूर्ण होते थे। ग्राम अथवा शहर की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले सभी व्यवसाय के लोग उसमें रहते थे जिसमें केवल वैश्य और शूद्र ही नहीं ब्राह्मण और क्षत्रिय भी शामिल थे। अतः वैश्य कालान्तर में शुद्रों के स्तर तक आ गए। युक्तिसंगत नहीं। सभाश्रृंगार के एक वर्णन से विदित होता है कि नगर में अनेक व्यवसायों को करने वाले तथा सभी वर्ण के लोग निवास करते थे—

तथा महासार्थवाह, इभ्य श्रेष्टि, व्यवहारिक, दौपिक, नैस्तिकः प्रमुख अस्तोक; कवि अणलोक; तथा सुवर्णकार, कांस्यकार, दंतकार, लोहकार,, शिल्पकार; रथकार, सूत्रधार, सूपकार, चित्रकार, कुंभकार, मालाकार रूप प्रमुख बसइ; नगर ज्ञातीय, श्रीमालज्ञातीय, डीडवाल सडेरवाल, जालंधरीय, सत्यपुरीय, प्रमुख ब्राह्मण; सोमवंशीय, सूर्यवंशीय, हरिवंशीय उग्रकुली, भोगकुली, सोलंकीय गुहिल्ल, उच्च, परमार, प्रतिहार, चौलुक्य, सकल प्रमुख क्षत्रिय; शिल्पकार, स्वर्णकार, प्रमुख वैश्य वर्ण; प्रमुख, सौद्र।[६३]

इस वर्णन से वैश्यों की निम्नता नहीं झलकती है। ग्राम अथवा नगर में ये एक साथ रहते थे और अपने व्यवसाय का पालन करते थे। वस्तुतः

---

५९. वही ३. ८६८।
६०. वही।
६१. The Rashtrakutas and their Times, pp. 332-33.
६२. Caste and class in India, pp. 57, 64, 88, 96.
६३. सभाश्रृंगार, पृ० ११।

वैश्यों के स्तर के सम्बन्ध में डा० अल्तेकर और डा० धुर्ये का कथन युक्तियुक्त नहीं। आचार्य हेमचन्द्र का कथन ही वैश्यों के व्यवसाय और उनकी स्थिति का सर्व प्रकारेण प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी संपुष्टि सभाश्रृंगार के उपर्युक्त वर्णन के होती है।

शूद्र— भारतीय सामाजिक आचार-विचार और व्यवहार-क्रम में शूद्रों का स्थान अन्य वर्णों की तुलना में चौथा स्थान था। समाज के अन्य वर्णों के कर्मों और अधिकारों की अपेक्षा इनके अधिकार और कर्म सीमित थे। न उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार था न व्यापार करने का समाज की सर्वविधिपूर्वक सेवा करना ही उनका मुख्य कर्म था। ईश्वर की ओर से शुद्र का एकमात्र कर्म ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, तीनों वर्ण की सूश्रुषा करना ही प्राचीन धर्म शास्त्रों में बताया गया है।[६४]

हेमचन्द्र ने दो प्रकार के शूद्र[६५] बतलाए हैं, एक आर्यावर्त में रहने वाले और दूसरे आर्यावर्त के बाहर रहने वाले। आर्यावर्त में रहने वाले शूद्रों के दो वर्ग थे, पात्र्या और अपात्र्या। जो शूद्र अभिजात्य वर्ग के वर्तनों में भोजन-पानकर सकते थे तथा मांजने से वर्तन शुद्ध हो जाते थे,[६६] वे पात्र्या नाम से संबोधित किये गये। और जो शूद्र इस योग्य नहीं थे वे अपात्र्या कहे गए। शूद्रों के विषय में सम्राट् भोज का विकल्प है कि अपने मान का ख्याल न करने वाले, पूर्ण रूप से पवित्र न रहने वाले, चुगलखोर और धर्म से विरत रहने वाले शूद्र जाति के अंतर्गत हुए। कौशल दिखाकर, मुख से विशेष प्रकार की आवाज निकाल कर, कारीगरी और पशु-पालन से जीविका चलाना तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य-तीनों वर्ण की सेवा करना उनका प्रधान धर्म है।[६७] भोज के इस कथन से स्पष्ट होता हैं कि जो शूद्र

---

६४. एकमेवतु, शूद्रस्या प्रभुः कर्मसभादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।। मनु० २.९१, याज्ञ० ५१.२०, महा० शांति०, ७२.८।

६५. पात्र् यशूद्रस्य-सिद्धहेमशब्दानुशासन, ३।१।४३।

६६. यैभुक्त पात्र संस्कारेण शुद्धयति ते पात्रमर्हन्तीति पात्र् याः, वही, ३।१।१४३।

६७. नातिमानभृतो नाति शुचयः पिशुनाश्च ये।
ते शूद्रजातयो जाता नाति धर्मरताश्चये।
कलारम्भोपजीवित्यं शिल्पिता पशुपोषणम्।
वर्णात्रितयशुश्रूषा धर्मस्तेषामुदाहृतः ।। समरांग सूत्रधार, ७.१५ १६।

मानी और पवित्र थे तथा धर्म–पालन करते थे, वे शूद्र वर्ग के ऊंचे रहते थे। आचार्य हेमचन्द्र ने भी इस प्रकार विचार किया है। उनका यह दृढ़ मत है कि शीलवान व्यक्ति ही आर्य है।[६८] जो व्यक्ति ज्ञान, दर्शन और चरित्र रखता है, वहीं आर्य है।[६९] इस प्रकार शूद्र भी इन्हीं गुणों को रखकर आर्य हो सकते थे। अगर ऐतिहासिक तथ्यों को देखा जाय तो आचार्य हेमचन्द्र का कथन सर्वांशतः खरा उतरता है। गिरि-पश्चिम शासन के दुर्जय परिवार और वेलनांडु के प्रधान, महामंडलेश्वर पद तक पहुँच गए थे, जो शूद्र थे।[७०] यद्यपि डा० घोषाल का यह मत है कि इस काल (१००० ई० से १३०० ई०) की कृतियां और टीकाएँ शूद्रों के व्यवसाय और स्तर के सम्बन्ध में पुराकालीन स्मृतियों का अनुसरण करती है।[७१] परन्तु यह कथन पूर्णतः एकांगी है। इस सम्बन्ध में प्रोफेसर डा० बुद्ध प्रकाश ने लक्ष्मीधर का उद्धरण देते हुए इस मत की स्थापना की है कि शुद्ध मस्तिष्क वाला (अथवा सद्‌चरित्र) शुद्र, भ्रष्ट ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य से अच्छा था।[७२] निश्चय ही इस युग के लेखकों ने पुरानी लीक का अनुसरण न कर युग की मांग का समर्थन किया है। जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है आचार्य हेमचन्द्र और सम्राट् भोज का यह मत है कि शूद्र पवित्रता, धर्मानुसरण, ज्ञान, और दर्शन से आर्य पद को प्राप्त कर सकता है। यही नहीं, मेघातिथि के काल में शूद्रों की सामाजिक स्थिति और उनका व्यवसाय सद्‌भावना की दृष्टि से देखा गया है। मेघातिथि और विश्वरूप दोनों ने यह आधार लिया है कि शूद्र न सेवक बनाए जा

---

६८. शीलमस्माकं स्वम् -सिद्धहेमशब्दानुशासन, २।१।२१।

६९. अर्यति गुणान् आप्नोतीति आर्यः। वही।

७०. Ganguly, D.C. : The Eastern Calukyas, p. 170

७१. "The description of Sudra's occupation and Status in the comentaries and digests of this period followed the old Smriti lines."- The Struggle for Empire p. 475.

७२. Inspite of these caste-complexes, the position of the lower classes improved during this period. Laksmidhara held that a pure-minded Sudra was better than a notorious Brahmana, Ksatriya or Vaisya. Some Aspects of Indian Culture on the eve of Muslim Invasions p. 39.

सकते हैं, न ब्राह्मण पर निर्भर किए जा सकते हैं। वे व्याकरण तथा अन्य विद्याओं के शिक्षक हो सकते हैं, स्मृतियों द्वारा निर्दिष्ट उन सभी कृत्यों को सम्पन्न कर सकते हैं, जो अन्य वर्णों के लिए हैं।[७३] अतः यह समीक्षा डॉ० घोषाल के मत का स्वयं खंडन कर देता है तथा मध्यकालीन शूद्रों की स्थिति और समाज में उनके स्थान की उच्चता दिग्दर्शित करती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने कुम्हार, नापित, बढ़ई, लोहार, तन्तुवाय-बुनकर, रजक धोबी, तक्ष, अयस्कार, आदि वर्ग के लोगों को शूद्र के अंतर्गत माना है।[७४] उनके अनुसार शूद्रों के छह नाम थे, शूद्र, अन्त्य वर्ण, वृषल, पद्यः पज्जः और जघन्यज।[७५] आभीर जाति को हेमचन्द्र ने महाशूद्र कहा है।[७६] कात्यायन ने भी महाशूद्र स्वीकार किया है।[७७] इस प्रकार शूद्रों में भी महाशूद्र थे, जो सम्भवतः शक, हूण और यवन जैसी विदेशी जातियों के लोगों की तरह थे।

अन्य निम्न जातियां— इन चार वर्णों के अतिरिक्त समाज में और भी अनेक जातियां थीं, जो इन वर्णों की अपेक्षा निम्न थी, जिनका कार्य भी निम्न था[७८] आचार्य हेमचन्द्र ने प्रधानतः तेरह जातियां बताई हैं, जो अनुलोम-प्रतिलोम के कारण बनी थीं, जिन्हें वे मिश्र जाति कहते हैं।[७९] मिश्र जातियां ये थीं। मूर्धावसिक्त, अम्बष्ठ, पराशव, निषाद, माहिष्य, उग्र, करण, आयोगव, क्षत्ता, चण्डाल, मागध, वैदेहक, सूत्त और रथकारक। ऐसी जातियों के विषय में अपरार्क का कथन है कि चांडाल, पुक्कस, भिल्ल, पारसी, महापातकियों से छू जाने पर सर्वस्त्र (सचैल) स्नान करे।[८०] अतः इस कथन से स्पष्ट होता है कि ये जातियां अस्पृश्य थीं। आचार्य हेमचन्द्र ने धोबी को

---

७३. मेधातिथि—मनु० ३.६७, १२१, १५६, १०. १२७।

७४. सिद्धहेमशब्दानुशासन, ६।१।१०२।

७५. शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलः पद्यःपज्जो जघन्यजः। अभिधानचिन्तामणि, ३.८९४।

७६. कथं महाशूद्रो-आभीजातिः नात्र शूद्र शब्दो जातिवाची कि तर्हि महाशूद्रशब्दः। यत्र तु शूद्र एव जातिवाची तत्र भवत्येव डीनिषेधः। महती चासौ शूद्रा च महाशूद्रेति- सिद्धहेमशब्दानु शासन, २।४।५४।

७७. ४।१।४।

७८. Some Aspects of Indian Culture on the Eve of Muslim Invasions, pp. 40, 111-17.

७९. अभिधानचिंतामणि, ३.८९४-९९।

८०. अपरार्क, पृ० २९३।

शूद्र के अन्तर्गत रखा है जबकि संवर्त का कथन है कि कैवर्त (केवट या मल्लाह), मृगयु (मृग मारने वाला), व्याध (बहेलिया), शौनि (कसाई), शाकुनिक (चिड़ीमार) तथा रजक (धोबी) अस्पृश्य हैं।[८१] अलबरूनी ने इन अस्पृश्य जातियों के आठ वर्ग बताए हैं। धोबी, मोची, मदारी, टोकरी, और ढार बनाने वाले, माझी (नाविक) मछुआ (मछली मारने वाले), पशु-पक्षी हिंसक और बुनकर। वह आगे कहता है कि हाड़ी, डोम, चांडाल और बधतौ निम्नतम कार्य करते हैं।[८२]

हेमचन्द्र[८३] ने इन जातियों की उत्पत्ति के विषय में प्रकाश डाला है, जिनसे यह विदित होता है कि ये जातियां कैसे उत्पन्न हुई।

१. **मूर्धावसक्ति :** जो व्यक्ति ब्राह्मण पुरुष और क्षत्रिय स्त्री के संयोग से उत्पन्न हुआ, वह, मूर्धावसिक्त कहा गया है।
२. **अम्बष्ठ :** वे थे जो ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से पैदा हुए थे।
३. **पराशव निषाद :** जो आदमी ब्राह्मण पुरुष शूद्र स्त्री के मिलन से उत्पन्न हुआ था, वह पराशव निषाद कहा गया।
४. **माहिष्य :** वर्ग के लोग वे थे जो क्षत्रिय पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न हुए थे।
५. **उग्र :** क्षत्रिय पुरुष और शुद्र स्त्री से जो उत्पन्न हुए वे उग्र कहलाए।
६. **करण :** वे थे जो वैश्य पुरुष और शुद्र स्त्री से पैदा हुए थे।
७. **आयोग :** जो शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री के संयोग से उत्पन्न हुए, वे आयोगव कहलाए।

---

८१. सवत-वही, पृ० ११९६।

८२. तहकीक-मालिल्-हिंद, पृ० ५०।

८३. क्षत्रियायां द्विजाद् मूर्धावसिक्तो विट्स्त्रियां पुनः।।
अम्बष्ठोऽथ पारशवनिषादौ शूद्रयोषिति।
क्षत्राद् माहिष्यो वैश्यायामुग्रस्तु वृषलस्त्रियम्।।
वैश्यात् तु करणः शूद्रात् त्वायोगवो विशः स्त्रियाम्।
क्षत्रियायां पुनः क्षत्रा, चण्डालो ब्राह्मणस्त्रियाम्।।
वैश्यात् तु मागधः क्षत्र्यां वैदेह को द्विजस्त्रियाम् ।
सूतस्तु क्षत्रियाज्जत, इति द्वादश तद्भिदः ।।
माहिष्येण तु जातः स्यात्, करण्यां रथकारकः। अभिधानचिन्तामणि, ३.८९५-९९

८. **क्षता :** जिनकी उत्पत्ति शुद्र पुरुष और क्षत्रिय स्त्री से हुई थी वे क्षत्ता कहे गए।

९. **चण्डाल :** शुद्र पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से जिनका जन्म हुआ वे चण्डाल की श्रेणी में आये।[८४]

१०. **मागध :** इनका जन्म वैश्य पुरुष और क्षत्रिय स्त्री से हुआ था, इस कारण इनका नाम मागध हुआ।

११. **वैदेहक :** जो व्यक्ति वैश्य पुरुष और ब्राह्मण स्त्री से पैदा हुए वे वैदेहक की श्रेणी में आए।

१२. **सूत :** इस नाम से वे लोग अभिहित हुए जो क्षत्रिय पुरुष और ब्राह्मण स्त्री के संयोग से उत्पन्न हुए।

१३. **रथकारक :** जो व्यक्ति माहिष्य पुरुष (क्षत्रिय पुरुष और वैश्य स्त्री से जो उत्पन्न थे) और करणी स्त्री (जो स्त्री वैश्य पुरुष और शूद्र स्त्री के संयोग से पैदा हुई थी।) से उत्पन्न हुआ हो, वह रथकारक कहा गया।

इस तरह आचार्य हेमचन्द्रका उपर्युक्त विवरण तत्कालीन समाज की नवीन उपलब्धि है तथा तद्‌युगीन समाज के स्वरूप को व्यक्त करने में नई दिशा प्रदान करता है।

---

८४. मनु के अनुसार भी चांडाल की उत्पत्ति शूद्र पिता और ब्राह्मणी माता से हुई थी- मनु० १०.१२।

सामायिक पाठ

श्रीमद् राजचन्द्र

१. प्रतिक्रमण कर्म[१]

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिये दुःख भारी,
जन्म मरण नित किये पापको ह्वै अधिकारी;
कोडि भवांतर मांहि मिलन दुर्लभ[२] सामायिक,
धन्य आज मैं भयो जोग मिलियो सुखदायक ।।१।।

अनन्तकाल से यह जीव संसार में परिभ्रमण कर रहा है, महा भयंकर दुःखों को भोग रहा है। जन्म-जरा-मरण, आधि-व्याधि-उपाधि आदि अनन्त काल से अनन्त अनन्त—बार भोगे है। उन सब दुःखों को भोगने का कारण अज्ञान आदि अनेक दोष हैं और यह जीव उनका भाजन बना हुआ है (अर्थात् अनन्त दोष-पाप से ही ये परिभ्रमण के दुःख चालू हैं)। उन दोषों के दूर करनेवाली और शुद्ध आत्मस्वभाव को प्रकट करने वाली सामायिक कोटि भवो में भी दुर्लभ है। उस सामायिक को करने का सुखदायक योग अवसर आज मुझे मिला है, अतएव मैं आज अत्यन्त धन्य हूँ, कृतार्थ हूँ। मेरा यह समय लेखे लगा, सफल हुआ है।

हे सर्वज्ञ जिनेश! किये जे पाप जु मैं अब,
ते सब मन वच काय योगकी गुप्ति बिना लभ;
आप समीप हजूरमांहि मैं खडो खडो सब,
दोष कहूँ सो सुनो करो नठ दुःख देहि जब ।।२।।

हे सर्वज्ञ जिनेश! मन, वचन और काय इन तीन योगों की गुप्ति (संयम) के अभाव में मैंने जो जो पाप किये वे सब पाप आप प्रभु के समीप खड़ा रहकर कहता हूँ। आप उन्हें सुनिये और उन सर्व दोषों को, जो मुझे दुःख देनेवाले हैं, नष्ट कीजिये।

---

१. पहले लगे हुए दोषों से निवृत्त होना— पीछे हटना।

२. रागद्वेषरहित होकर समभावरूप आत्मस्वभाव में रहना।

क्रोध मान मद लोभ मोह मायावश प्रानी,
दुःखसहित जे किये दया तिनकी नहि आनी;
बिना प्रयोजन एक इन्द्रि बि ति चउ पंचेन्द्रिय,
आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लग्यो मोहि जिय ।।३।।

क्रोध, मान, मद, लोभ मोह और मायाके वश होकर मैंने जिन-जिन प्राणियों को दुःखी किया, उनकी दया नहीं की, बिना कारण एक दो तीन चार और पाँच इन्द्रियवाले जिन-जिन जीवों की विराधना की, उससे मुझे जो दोष लगा, वह सब दोष, हे प्रभो! आपकी कृपा से मिथ्या–निष्फल हो।

आपस में इक ठौर थापि करि जे दुख दीने,
पेलि दिये पग तलें दाबि कर प्राण करीने;
आप जगतके जीव जिते तिन सबके नायक,
अरज करूँ मैं सुनो दोष मेटो दुःखदायक ।।४।।

जीवों को एक जगह एक दूसरे के ऊपर डालकर दुःख पहुँचाया, पैरके नीचे दबा कर, कुचल कर प्राणरहित किया; हे प्रभो! जगत में जितने जीव हैं उन सबके आप नायक—स्वामी हैं, इस कारण आपसे मैं यह प्रार्थना करता हूँ उसे आप कृपा करके सुनिये, स्वीकार कीजिये और उन दुःखदायक दोषों से मुझे मुक्त कीजिये।

अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय,
तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय;
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि,
यह पडिकोणों कियो आदि षट्कर्म मांहि विधि।।५।।

अंजनचोर आदि बहुत-बहुत घोर पाप करनेवालों के सब अपराध क्षमा करके आपने उन्हें निर्दोष किया है। तो अब मुझसे जो जो अपराध हुए हों उन सबको भी हे दयानिधान ! आप क्षमा करें।

प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, सामायिक, स्तवन, वन्दना और कायोत्सर्ग, ये षट (छह) कर्म आवश्यक–नित्य अवश्य करने योग्य कर्म हैं। इनमें से यह प्रथम प्रतिक्रमण किया है।

२. प्रत्याख्यान कर्म

जो प्रमादवश होय विराधे जीव धनेरे,

तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे;
सो सब झूठो होहु जगतपतिके परसादै,
जा प्रसादतैं मिले सर्व सुख, दुःख न लाधै ।।६।।

कषाय, इन्द्रियविषय, विकथा, स्नेह और निद्रा, इस प्रकार पाँच तरह के प्रमाद है। अथवा धर्म के प्रति अनादरभाव, उन्माद, आलस्य, कषाय, ये सब प्रमाद के लक्षण हैं। इस प्रमाद के वश होकर मैंने बहुत जीवों की विराधना की और उससे मैंने जो पापसमूह उपार्जित किया, वह सभी पाप हे जगत्पति! आपकी कृपा से मिथ्या हों। आपके प्रसाद (कृपा) से सब सुख मुझे प्राप्त हों और दुःख दूर हों।

मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ,
किये पाप अति घोर पापमति होय चित्त दुठ;
निंदूँ हूँ मैं बार-बार निज जियको गरहूँ,
सब विधि धर्म उपाय पाय फिरि पापहि करहूँ ।।७।।

मैं पापी, निर्लज्ज, निर्दय और महाशठ (अज्ञानी-धूर्त) हूँ। दुष्ट चित्त से पापमय बुद्धिवाले मैंने अति घोर पाप किये हैं। मैं उन सब पापों की निन्दा करता हूँ। मेरे पापी जीवकी मैं बार-बार गर्हा (सद्‌गुरुकी साक्षी से निंदा) करता हूँ। सब प्रकार के धर्म के उपाय-साधन पा करके भी मैं फिर पाप ही करता हूँ। इसलिये मुझे धिक्कार है।

दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावककुल भारी,
सत्संगति संयोग धर्म जिन श्रद्धा धारी;
जिनवचनामृत धार समावर्ते जिनवानी,
तो हूँ जीव संहारे धिक् धिक् हम जानी ।।८।।

सब देहों में मनुष्य देह सर्वोत्तम हैं। क्योंकि सब दोषों की निवृत्ति करके मोक्ष प्राप्त करना एकमात्र मनुष्य देह से संभव है। इस मनुष्यदेह की प्राप्ति बहुत पुण्योदय से होती है। इस कारण मनुष्य भवका मिलना अत्यन्त दुर्लभ कहा गया है। इतना दुर्लभ मनुष्यदेह मिला किन्तु यदि सद्धर्मरहित कुल में जन्म हुआ तो उस कुलके मिथ्या धर्म संस्कार छोड़कर सद्धर्मको ग्रहण करने में बहुत कठिनाई होती है। अतएव सद्धर्मयुक्त कुल में जन्म होना मोक्षप्राप्ति के लिये दूसरा दुर्लभ साधन है। ऐसे कुल में जन्म होने पर भी सद्धर्मके उपदेशक

आत्मज्ञानी सत्पुरुष की प्राप्ति, उनका समागम; उनका उपदेश, उससे होनेवाली वीतराग भगवान के धर्मकी श्रद्धा, इत्यादि उत्तरोत्तर दुर्लभ प्राप्ति कहलाती है।

किसी तीव्र पुण्य के उदय से मैंने उपर्युक्त सब दुर्लभ सामग्री तो प्राप्त कर ली है। मनुष्य देह से लेकर वीतराग प्रभु के वचनामृत की वर्षारूप जिनवाणी के अभ्यास तक सबकी प्राप्ति मुझे हुई है। फिर भी अब तक मैं जीवहिंसा आदि दोषों में प्रवत्त हो रहा हूँ। इस कारण मुझे बार-बार धिक्कार है।

इन्द्रियलम्पट होय खोय निज ज्ञान जमा सब,
अज्ञानी जिम करै तीसी विधि हिंसक ह्वै अब;
गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले,
ते सब दोष किये निंदूँ अब मन वच तोले ।।९।।

पांच इन्द्रियों के विषयों में अत्यन्त आसक्त (इन्द्रियलम्पट) होकर, मैंने ज्ञानका -बोधका जो कुछ संचय किया था उसे गँवा दिया और अज्ञानी की भाँति हिंसा आदि पापों में निःशंक-निर्भय होकर प्रवृत्ति की। जाते-आते (गमनागमन करते) मैंने जिन-जिन बेचारे निर्दोष जीवों का हनन किया हो, विराधन किया हो, उस सब पाप की अब अपने मन एवं वचन को समतोल रखकर निष्कपट भावसे निन्दा करता हूँ।

आलोचन विधि थकी दोष लागे जु घनेरे,
ते सब दोष विनाश होउ तुमतैं जिन! मेरे;
बार-बार इस भाँति मोह मद दोष कुटिलता,
ईर्षादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ।।१०।।

हे जिन वीतराग! आलोचना करते जो दूसरे बहुत से दोष लगे हों वे सब मेरे दोष आपकी कृपा से नष्ट हों। इस प्रकार मोह, मद, द्वेष, कुटिलता (माया), ईर्षा आदि से जो जो दोष मुझे लगे हों, उन सब दाषों की मैं भयभीत होकर बार-बार निन्दा करता हूँ। मेरे वे सब दोष मिथ्या हों।

३. सामायिक कर्म

सब जीवनमें मेरे समताभाव जग्यो है,
सब जिय मो-सम समता राखो भाव लग्यो है;
आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छांडि करिहूं सामायिक,
संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायिक ।।११।।

सब जीवों के प्रति मुझमें समताभाव जागृत हुआ है। सर्व जीव मेरे समान समताभाव धारण करें, ऐसी मेरी इच्छा है।

आर्त्तध्यान— दुःखमय अथवा क्लेशयुक्त भावोंकी एकाग्रता होना आर्त्तध्यान है। यह प्रायः तिर्यंचगतिका कारण होता है अतः त्यात्ज है। इसके चार भेद हैं —

(१) इष्टवियोगज आर्त्तध्यान—प्रिय पुत्र, मित्र, कलत्र आदिके वियोग से होनेवाले दुःखमय भावकी एकाग्रता।

(२) अनिष्टसंयोगज आर्त्तध्यान— अप्रिय दुर्गुणी पुत्र या कलत्र अथवा शत्रु आदि का संयोग होने पर यह संयोग कब छूटे इस प्रकार की चिन्ता।

(३) पीड़ा या व्याधिप्रतिकार चिन्तन आर्त्तध्यान— शरीर में रोग होने पर पीड़ा से क्लेशयुक्त भाव होना, रोग कब मिटे, उसके उपायों में चिन्तित परिणाम रहना।

(४) निदान आर्त्तध्यान—धर्मक्रिया के फलस्वरूप आगामी काल में भोगप्राप्ति चिन्ता से आकुल-व्याकुल भाव रहना।

रौद्रध्यान— दुष्ट परघातक स्वार्थसाधक हिंसक परिणाम की एकाग्रता होना रौद्रध्यान है। यह प्रायः नरक गतिका कारण होता है, अतः त्यागने योग्य है। इसके भी चार भेद हैं—

(१) हिंसानन्दी– दूसरे प्राणियों की हिंसा करने, कराने या उसकी अनुमोदना करने में आनन्द माननेवाले को वैसे दुष्ट परिणामों की एकाग्रता होना।

(२) मृषानन्दी– असत्य बोलने में, बोलवाने में, बोलने वाले का अनुमोदन करने में, झूठे को सच्चा सिद्ध करने में आनन्द माननेवाले को ऐसे दुष्ट परिणामों की एकाग्रता होना।

(३) चौर्यानन्दी– परकीय द्रव्य की चोरी करना, कराना या करनेवाले को अच्छा समझना, इत्यादि चोरी में आनन्दित परिणामों की एकाग्रता।

(४) परिग्रहानन्दी– परिग्रह संचित करने, कराने या उसका अनुमोदन करने में, परिग्रहरक्षा में कुशलता मानकर उसमें आनन्दित परिणाम की एकाग्रता।

उपर्युक्त आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान अधोगतिका कारण होने से उन्हें

त्यागकर अब मैं धर्मध्यानका आश्रय ग्रहण करके सामायिक (समताभाव) करता हूँ और भावना करता हूँ कि भाव की वृद्धि करनेवाला मेरा संयम कब शुद्ध होगा!

पृथ्वी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति,
पंचहि थावर मांहि तथा त्रस जीव बसै जित;
बे इन्द्रिय तिय चउ पंचेन्द्रिय मांहि जीव सब,
तिनसैं क्षमा कराऊँ मुझ पर क्षमा करो अब ।।१२।।

पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, इन पाँच स्थावर एकेन्द्रिय जीवों को तथा दो तीन चार और पाँच इन्द्रियों वाले संज्ञी, इन सब जीवों को मैं खमाता हूँ, सबसे क्षमायाचना करता हूँ। सब जीव मुझे क्षमा करें।

इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु तृण,
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहु सम गण;
जन्मन मरन समान जान हम समता कीनी,
सामायिक का काल जितै यह भाव नवीनी ।।१३।।

सामायिक के इस अवसर में तृण और स्वर्ण, महल और श्मशान, शत्रु और मित्र, जन्म और मरण, सब मेरे लिये समान है। जितने काल तक सामायिक में रहूँ उतने काल तक यही सर्वोत्कृष्ट समभाव बना रहे, दूसरा भाव उत्पन्न न हो।

मेरो है इक आतम तामैं ममत जु कीनो,
और सबै मम भिन्न जानि समता रस भीनो;
मात पिता सुत बन्धु मित्र तिय आदि सबै यह,
मौतैं न्यारे जानि यथारथ रूप कर्यो गह ।।१४।।

एक मात्र आत्मा ही मेरा है। मैं अब अपने आत्म स्वरूप में ही ममत्वभाव (अपनापन) धारण करता हूँ। मेरे आत्मस्वरूप से भिन्न सब पर हैं, जुदा हैं, मेरा नहीं हैं, ऐसा जानकर मैं समस्त परद्रव्यों और परभावों के प्रति राग-द्वेष से रहित होकर समभावरूप शान्त रसमें मग्न होता हूँ। माता, पिता, पुत्र, भाई, मित्र, पत्नी आदि सब मेरे से भिन्न ही हैं, ऐसा जानकर मैं अपने यथार्थ आत्म स्वरूप को ही ग्रहण करता हूँ।

मैं अनादि जग-जालमांहि फंसि रूप न जाण्यो,
एकेन्द्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो;
ते अब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी,
भव भवको अपराध क्षमा कीज्यो करि मरजी ।।१५।।

अनादि काल से संसाररूपी जाल में फँसकर मैंने अपने आत्मस्वरूप को नहीं जाना, इस कारण एकेन्द्रिय द्वींद्रिय आदि जीवों का प्राणहरण किया। वे सब जीवसमूह मेरी यह प्रार्थना सुनें और भवभव में उनके प्रति मेरे जो अपराध हुए हों उन्हें कृपा करके क्षमा कर दें।

४. स्तवन कर्म

नमौ रिषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्मको,
संभव भवदुखहरन करन अभिनंद शर्मको;
सुमति सुमतिदातार तार भवसिंधु पार कर,
पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्राति धर ।।१६।।

श्री ऋषभदेव जिनेश्वर को तथा कर्मशत्रुको जीतने वाले अजित जिनको नमस्कार करता हूँ। भवदुःख अर्थात् जन्म मरण आदि संसार दुःखको हरण करनेवाले संभवनाथ प्रभु को तथा मोक्षसुखके दाता अभिनन्दन जिनको नमस्कार करता हूँ। सन्मति देनेवाले हे सुमतिनाथ! मुझे संसार समुद्रसे तारो, पार करो। हे कमलके समान कान्तिवाले पद्मप्रभ प्रभो! मेरे ऊपर प्रीति (कृपा) करके मेरी भवभीति (संसार भय) टालो।

श्री सुपार्श्व कृतपाश नाश भव जास शुद्ध कर,
श्री चन्द्रप्रभ चन्द्रकान्ति-सम देहकान्ति धर;
पुष्पदन्त दमि दोषकोष भवि पोष रोषहर,
शीतल शीतल करन हरन भवताप दोषहर ।।१७।।

हे सुपार्श्वनाथ! आपने कर्मके पाश (बंधन) का नाश किया है। आपका जीवन हमको शुद्ध-निर्दोष बनाकर संसार से तारनेवाला है। हे चन्द्रप्रभ प्रभो! आप चन्द्रमा की कान्ति के समान मनोहर देह की कान्ति के धारक हैं। हे पुष्पदन्त (सुविधिनाथ) प्रभो! आप दोनों के समूह को टालने वाले, भव्यजीवों को मोक्षमार्ग में पोष-पुष्टि-सहायता करनेवाले और रोष अर्थात् क्रोध द्वेष आदि को हरण करने वाले हैं। संसार के ताप को शान्त

करने वाले, परम आत्मशान्ति स्वरूप शीतलता करनेवाले शीतलनाथ भगवान्! हमारे सब दोषों को दूर करो।

श्रेयरूप जिन श्रेय धेय नित सेय भव्य जन,
वासुपूज्य शत पूज्य वासवादिक भवभय हन;
विमल विमलमति देन अंतगत है अनंत जिन,
धर्म शर्म शिव करन शान्ति जिन शान्ति विधायिन ।।१८।।

हे श्रेयांस जिन! आप श्रेय-कल्याणरूप हैं, आप भव्यजनों के लिये नित्य सेवा करने योग्य ध्येय हैं। हे वासुपूज्य प्रभो! आप सौ इन्द्रों के द्वारा पूज्य हैं और संसार भय को हरनेवाले हैं। हे विमलनाथ भगवन् आप! विमल (शुद्ध) बुद्धि के दाता हैं। हे अनन्त जिन! आप संसार (जन्म-मरण) के अन्त (मुक्ति) को प्राप्त हैं। हे धर्मनाथ! आप शर्म (सुख) एवं शिव (कल्याण) करने वाले हैं। हे शान्तिनाथ भगवन्! आप शान्तिकर्त्ता हैं।

कुंथु कुंथुमुख जीवपाल अरनाथ जालहर,
मल्लि मल्लसम मोहमल्ल मारन प्रचारधर;
मुनिसुव्रत व्रतकरन नमत सुरसंघहि नमिजिन,
नेमिनाथ जिन नेमि धर्म रथ मांहि ज्ञानघन ।।१९।।

हे कुन्थनाथ! आप कुंथू जैसे सूक्ष्म जीवों से लेकर सर्व प्राणियों के रक्षक हैं। हे अरनाथ! आप संसार-जाल को नष्ट करनेवाले हैं। हे मल्लिनाथ! आप मोहरूपी मल्ल को मारने के लिये समर्थ मल्ल के समान हैं। आप सत्य धर्मोपदेशादिक उत्कृष्ट आचारको धारण करनेवाले हैं। हे मुनिसुव्रत प्रभो! आप व्रत करनेवाले हैं। हे नमि जिन! सुरों असुरों का समूह आपको नमन करता है। हे नेमिनाथ! आप धर्म-रथ की नेमि (चाकको वाट) के समान हैं, ज्ञानसमूह है, अथवा अनन्तज्ञान के धनी हैं, ज्ञानधन हैं। (पाठान्तर ज्ञानधन)

पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपल सम मोक्षरमापति,
वर्द्धमान जिन नमौं वमौं भवदुःख कर्मकृतः
या विधि मैं जिन संघरूप चउवीस संख्यधर,
स्तवूं नमूं हूं बार बार वंदूं शिवसुखकर ।।२०।।

हे पार्श्वनाथ प्रभो! आप पारसमणि के समान, लोहरूप अज्ञानी जनों

को कंचन-आत्मज्ञानदशामय बनाने वाले हैं। आप मोक्ष-लक्ष्मी के स्वामी हैं। हे वर्धमान भगवान्! आपको नमस्कार करता हूँ, और कर्मजनित संसार दु:ख को दूर करता हूँ अर्थात् आपको नमन करने से मेरे संसार दु:ख दूर हो जाते हैं। इस प्रकार मोक्ष-सुख को देनेवाले चौबीस संख्यावाले जिनेश्वरों का बारबार स्तवन करता हूँ और उन्हें प्रणाम करता हूँ।

५. वन्दना कर्म

वंदूं मैं जिन वीर धीर महावीर सुसन्मति;
वर्द्धमान अतिवीर वंदिहौं मन वच तन कृत;
त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति वंदूं,
वंदूं नितप्रति कनक रूप तनु पाप निकंदूं ।।२१।।

वीर, महावीर, सन्मति, वर्धमान और अतिवीर (इन पाँच नामों से सुविख्यात) हे जिनेन्द्र ! आपको मन, वचन, कायसे वन्दन करता हूँ, हे त्रिशला माता के सुपुत्र! आप अनन्त आत्मिक ऐश्वर्य से सम्पन्न होने के कारण महेश हैं। केवलज्ञानी होने से धीश हैं, विद्यापति हैं। आपको मैं नित्य प्रति वंदन करता हूँ। कंचनवर्ण काया के धारक हे प्रभो! आपको वन्दन करके मैं अपने पापों को नष्ट करता हूँ।

सिद्धारथ नृपनंद द्वंद दुख दोष निटावन,
दुरित-दवानल-ज्वलित ज्वाल जगजीव उद्धारन;
कुंडलपुर करि जन्म जगत जिय आनन्द कारन,
वर्ष बहत्तरि आयु पाय सब ही दुख टारन ।।२२।।

हे महाराजा सिद्धार्थ के नन्दन! जन्म-मरण, राग-द्वेष, हर्ष-शोक आदि से जनित दु:ख और (वैभाविक भावरूप) समस्त दोषों को मिटाने वाले और पाप के दावानलकी प्रज्वलित ज्वालाओ में जलते हुए जगत के जीवों का उद्धार करनेवाले! आप कुंडलपुर में जन्मे और जगत के जीवों के परम आनन्द के कारण बने। आप बहत्तर वर्ष की आयु पाकर सब दु:खों का नाश करने वाले बने हैं।

सप्त हस्त तनु तुंग भंग कृत जन्म-मरण-भय,
बाल ब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय;
दे उपदेश उद्धारि तारि भवसिन्धु जीवघन,

आप बसे शिव मांहि ताहि वंदौं मन-वच-तन ।।२३।।

सात हाथ ऊँचे शरीरवाले, जन्म-मरण के भयको भंग करने वाले, बालब्रह्मचारी, ज्ञेय (जानने योग्य), हेय (त्योगने योग्य), उपादेय (ग्रहण करने योग्य) का ज्ञान हों ऐसा उपदेश देकर बहुत जीवों के समूह के संसार-समुद्र से तारनेवाले, अब मोक्ष के अतीन्द्रिय आत्मिक अनन्त सुख में विराजमान हुए हे महावीर प्रभो! आपको मैं मन, वचन, काया से प्रणाम करता हूँ।

जाके वन्दन थकी दोष दुःख दूरहि जावे,
जाके वन्दन थकी मुक्ति-तिय सन्मुख आवे;
जाके वन्दन थकी वंद्य होवे सुरगनके,
ऐसे वीर जिनेश वंदिहौं कम युग तिनके ।।२४।।

जिसको वन्दन करने से आत्मा की अशुद्धतारूप सर्व दोष और संसार-परिभ्रमण रूप सर्व दुःख दूर हो जाता है, जिसको वन्दन करने से मुक्तिरूपी स्त्री सन्मुख आती है, जिसको वन्दन करने से सुरों-असुरों के समूह द्वारा पूजित इन्द्रपद अथवा अर्हत्पद प्राप्त होता है, ऐसे वीर प्रभुके चरणयुग को नमस्कार करता हूँ।

सामायिक षट् कर्ममाहि वंदन यह पंचम,
वंदे वीर जिनेन्द्र इन्द्र शत वन्द्य वन्द्य मम;
जन्म-मरण भय हरो करो अघशान्ति शान्तिमय,
मैं अघकोष सुपोष दोषको दोष विनाशय ।।२५।।

सामायिक के जो षट् आवश्यक कर्म हैं उनमें से यह वन्दन नामक पाँचवाँ आवश्यक करता हूँ। सौ इन्द्रौं द्वारा वन्दनीय होने के कारण मेरे भी वन्दनीय है ऐसे वीर जिनेन्द्र को नमस्कार करता हूँ। हे प्रभो! मेरे जन्ममरण के भयको टालो। हे शान्तिमय भगवन्! मेरे पापों की निवृत्ति रूप शान्ति मुझे प्रदान करो। मैं पापों का भंडार हूँ। दोषों का पोषण करने वाले, बढ़ानेवाले मेरे दोष का नाश करो।

६. कायोत्सर्ग कर्म

कायोत्सर्ग विधान करूँ अंतिम सुखदाई,
काय त्यजनमय होय काय सबको दुःखदाई;

पूरव दक्षिण नमूँ दिशा पश्चिम उत्तर मैं,
जिनगृह वन्दन करूँ हरूँ भव-पाप-तिमिर मैं ।।२६।।

अब अन्तिम कायोत्सर्ग नामक आवश्यक कर्म, जो सुखदायक है, करता हूँ, काया रोगादिक अनेक प्रकार से दुःखको ही देनेवाली है, अन्त में तो यह काया सबको छोड़नी ही है तथा अशरीरीभाव–मोक्षभाव उत्पन्न करने के लिये कायोत्सर्ग है। अतएव देहभाव, शरीर में आत्मभाव, देहममत्व त्यागकर मैं कायोत्सर्ग में, मनको आत्मा में लीन करने के लिये आत्मभावना में एकाग्र करता हूँ। पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा की ओर घूमकर उन दिशाओं में स्थित सभी जिनमंदिरों को नमस्कार करता हूँ और संसारकृत पापमय अंधकार को नष्ट करता हूँ।

शिरोनति मैं करूँ नमूँ मस्तक कर धरिकैं,
आवर्त्तादिक क्रिया करूँ मनवच मद हरिकैं;
तीन लोक जिनभवनमांहि जिन हैं जु अकृत्रिम,
कृत्रिम है द्वय अर्ध द्वीप मांहि वंदौ जिम ।।२७।।
आठ कोडि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणु,
च्यारि शतक परि असी एक जिनमंदिर जाणु;
व्यंतर ज्योतिषिमांहि संख्यरहिते जिनमंदिर,
जिनगृह वन्दन करूँ हरहु मम पाप संघकर ।।२८।।

मन वचन और काय के मद को त्यागकर, अत्यन्त नम्रभाव धारण करके, तीन आवर्त्त आदि क्रियां करके, मस्तकपर दोनों हाथ जोड़कर, सर्व शाश्वत जिनप्रतिमाओं को मैं नमस्कार करता हूँ। तीन लोक में जो कृत्रिम और अकृत्रिम चैत्यालय (जिनमन्दिर) हैं तथा अढ़ाई द्वीप में जो कृत्रिम तथा आठ करोड़, छप्पन लाख, सत्तानवे हजार चार सो इक्यासी (८, ५६, ९७, ४८१) अकृत्रिम चैत्यालय हैं, उनमें विराजमान जिनप्रतिमाओं को तथा व्यन्तर और ज्योतिष्क देवों के निवासों में जो असंख्यात जिनमन्दिर हैं उनमें विराजमान समस्त जिनप्रतिमाओं को मैं भक्तिभाव से वन्दन करता हूँ और अपने समस्त पापों के समुदाय का नाश करता हूँ।

सामायिक सम नाहिं और कोउ वैर मिटायक,
सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्री दायक;

श्रावक अणुव्रत आदि अंत सप्तम गुणस्थानक,
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुःखहानक ।।२९।।

मुक्तात्मा, सिद्धात्मा, परमात्मा का अनन्तज्ञान, दर्शन, सुख और वीर्य आदि से परिपूर्ण जैसा शुद्ध सहज आत्मस्वरूप है वैसा ही मेरा और जगत के सर्वजीवों का मूल शुद्ध स्वरूप है; ऐसा परम कृपालु श्री सद्‌गुरुकी कृपा से जाना है। तो द्रव्यदृष्टि से 'सर्वजीव छे सिद्धसम' अर्थात् समस्त जीव परमात्मा के समान हैं, और साक्षात् मेरे आत्मस्वरूप है इस प्रकार सबमें आत्मा को देखने की दृष्टि गुरुगमसे साध्य हो तो सच्चा सामायिक भाव आता है। सम्यक्त्व के अभाव में सच्चे समभाव का प्रादुर्भाव नहीं होता। सम्यग्दृष्टि का यह सामायिक जगत के सर्व जीवों के प्रति वैर-विरोध, द्वेष इत्यादि विषमभाव मिटाकर, मैत्री-भावकी वृद्धि करके, अपने शुद्ध आत्मभाव की वृद्धि करके, अपने शुद्ध आत्मभाव की वृद्धि करके अन्त में पूर्ण वीतराग भाव को प्रकट करता है।

श्रावक अर्थात् जिसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया है ऐसा अणुव्रत (गृहस्थधर्म) को पालने वाला गृहस्थसाधक इस सामायिक द्वारा आत्मभाव की विशुद्धता बढ़ाकर सातवें अप्रमत्त गुणस्थानक तक पहुँच सकता है। यह सामायिक आवश्यक करनेवाला निश्चय ही अपने दुःखों का नाश करके आत्मिक सुख प्राप्त करता है।

जे भवि आतमकाजकरण उद्यमके धारी,
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी;
राग द्वेष मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब,
बुध 'महाचंद्र' बिलाय जाय तातैं कीज्यौं अब ।।३०।।

जो भव्य जीव अपने आत्मा की सिद्धिरूप निज कार्य को करने में प्रयत्नवान हों उन्हें सब अन्य कार्य छोड़कर, पूर्ण रूप से शुद्ध भाव को लक्ष्य में रखकर शुभ भावपूर्वक सामायिक करना चाहिये। पंडित महाचन्द्र (इस सामायिक पाठ के कर्त्ता) कहते हैं कि इस समायिक से राग, द्वेष, मद, मोह, क्रोध, लोभ आदि समस्त दोष विलीन हो जाते हैं। अतएव सब आत्मार्थियों को यह आवश्यक अवश्य आदरपूर्वक करना चाहिए।

श्रीचन्द्रराज चरित्र

कुमार ! दूसरे के गुणों को देखने वाले, अपने दोषों को देखने वाले, परकीय कार्य को सधाने वाले, और पराये दुःखों में दुःखी होने वाले पुरुष संसार में विरले ही होते हैं।

कुमार ने योगी के भाव समझ कर उससे पूछा बाबा ! तुम कौन हो? योगी ने कहा भैया ! मेरा नाम त्रिपुरानन्द भारती है। मैं खर्पर योगी का छोटा भाई हूँ।

मैं लोकोपकार की इच्छा से सुवर्ण पुरुष की सिद्धि के लिये भटकता हुआ यहाँ आया हूँ। अभी तक कहीं मुझे कोई ऐसा मनुष्य नहीं मिला, जो मेरे इस कार्य में उत्तर–साधक बने। यहाँ पर तुम्हें आकृति और शरीर की कान्ति से महापुरुष और परोपकारी समझ मैं तुम्हारे पास आया हूँ अतः तुम आज रात्रि में मेरे उत्तर–साधक, बनो जिससे मेरे कार्य की सिद्धि शीघ्र हो जाय।

परोपकारी कुमार उसकी प्रार्थना को ठुकरा न सका, और उसे उस कार्य की विधि पूछ बैठा। योगी ने उत्तर दिया, महाशय! स्वर्णपुरुष की सिद्धि रात्रि के समय शमशान में मनुष्य के मृत शरीर की साधना से होती है और सत्वशाली पुरुष की विद्यमानता में सारी सामग्री सुलभ हो जाती है।

योगी के वचन सुनकर श्रीचन्द्र ने कहा, अगर ऐसा है तो जाओ, वहाँ जाकर अपनी सामग्री जुटाओ। मैं वहाँ अवश्य ही आऊंगा। कुमार की प्रशंसा करता हुआ वह योगी वहाँ से चलकर शमशान में पहुँचा और वहाँ पर सारी सामग्री जुटाली। अग्नि कुम्ड और शवस्थान आदि का निर्माण अभ्यस्त होने के कारण उसने बात की बात में कर लिया।

इधर योगी के चले जाने के बाद कुमार ने अपनी पत्नी को योगी का सारा हाल बतला दिया। यह सुनकर वह बोली, स्वामिन्! आपने योगी की प्रार्थना स्वीकार क्यों की? ये तो हमेशा से कपटी और कुटिल आचरणवाले होते हैं। इनका विश्वास करना आग से खेलना है। अतः मैं आपको वहां किसी भी प्रकार जाने नहीं दूंगी।

वह बोला, प्रिये! तुम जानती ही हो, कि शुद्ध मनवाले का कल्याण ही होता है सम्पत्तियां उनके सामने हाथ बांधे खड़ी रहती हैं। विघ्न समूह उनके सामने से कपूर की तरह उड़ जाते हैं। अतः तुम घबड़ाओ मत किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। मुझे अपना वचन पालन करने दो। अपना नारी धर्म पहिचान कर मेरा साहस बढ़ाओ। वचन भंग से संसार में मेरी और तुम्हारी दोनों की हँसी होगी और आजीवन इस कलंक को चन्द्र के कलंक की तरह धारण करना पड़ेगा। धीरज धरो, नमस्कार मंत्र के प्रभाव से तुम्हारा सब तरह से कल्याण होगा। लो मैं तुम्हें फिर से वानरी बना देता हूँ। तुम निर्भय होकर इस पेड़ पर चढ़ जाओ।

यह कह कर कुमारने उसी प्राप्त-अंजन के योग से उसे वानरी बना कर वृक्ष पर चढा दिया और स्वयं हाथ में तलवार लिये घुमता हुआ शमशान में योगी के पास जा पहुँचा। योगी पहले से ही तैयार था। आते हो योगी ने कुमार से रक्षक बनने की प्रार्थना की। कुमार ने उसे निर्भयतापूर्वक कार्य करने को कहा।

योगी विधि-पूर्वक जप और हवन आदि करके अर्द्ध–रात्रि के समय कुमार से बोला, वीर! सुनो। इसी दिशा में एक बहुत बड़ा बड़ का वृक्ष है। उस पर किसी चोर का मृत शरीर लटक रहा है। तुम निर्भयता से वहाँ जाकर उस शव को यहाँ ले आओ। देखना! बोलने की जरूरत पड़े तो भी तुम मत बोलना।

योगी की आज्ञा पाकर कुमार शीघ्र ही रात्रि की शान्ति को भंग करता हुआ उस बट-वृक्ष के नीचे जा पहुँचा। वहाँ पर चोर के शव को लटकता हुआ देखकर वह उस पर चढ़ा और चन्द्रहास तलवार से उसके बंधन काट डाले। ज्योंही वह उस शव को पृथ्वी पर गिराकर वृक्ष से नीचे उतरा, त्योंही क्या देखता है? कि वह शव पूर्व की तरह फिर से उसी शाखा में लटक रहा है। यह देख कुमार को न तो कोई आश्चर्य हुआ, और न वह डरा, परन्तु साहस करके वह फिर पेड़ पर चढ़ा। फिर उसने उसी तरह बंधन काटकर उस शव को अपने कन्धे पर उठाकर बड़ से नीचे उतरा।

कुमार उस शव को कभी कंधे पर और कभी हाथ में उठाता हुआ मार्ग में चलने लगा। इतने में उस शव ने जोर से हँस कर कुमार से कहा, तुम राजा भी हो और राजकुमार भी हो अतः मुझे कोई कथा सुनाओ।

लेकिन कुमार ने उसको कोई उत्तर नहीं दिया। तब वह शव फिर बोला, अगर तुम नहीं कहते हो तो लो मैं ही पद्‌मावती की लौकिक कथा सुनाता हूँ मगर सुनते समय हुँकारा अवश्य देना पड़ेगा। यह कह कर शव ने कहना शुरु किया—

क्षितिप्रतिष्ठित नाम के नगर से राजकुमार गुणसुन्दर और मन्त्री कुमार सुबुद्धि ये दोनों घोड़े पर बैठकर बाहर निकले। दैव-योग से मार्ग भूलकर वे किसी बड़ी भारी अटवी में भटकने लगे। प्यास के मारे उनके होंठ सूख कर काले पड़ गये थे, और चेहरे निस्तेज हो चले थे। अन्त में पानी की खोज करते करते एक सरोवर की तीर पर जा पहुँचे। वहाँ पर वे दोनों एक यक्ष मन्दिर में ठहरे। सुबुद्धि शीघ्र ही तालाब का जल पीकर लौट आया और घोड़ों की रखवाली करने लगा। इसके बाद राजकुमार ने भी बहुत समय की प्यास को शान्त किया । बाद में वह सरोवर में जल-क्रीड़ा करता हुआ सामने के तीर पर जा पहुँचा। वहाँ कोई कन्या कमल लिये खेलती हुई बगीचे में से निकल कर आई, और कुमार को देखकर वह अपने कमल, से दंतपंक्ति और सनों को छूकर संकेत करके वापिस प्रसन्नचित्त अपने स्थान को लौट गई।

कुमार भी उसके संकेत को न समझ कर अपने साथ निराशा लिये पुनः उस तीर पर आ पहुँचा जहाँ पर उसका मित्र उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था। उसने अपने मित्र को उस कन्या द्वारा किये गये सारे संकेत कह सुनाये। मित्र बड़ा बुद्धिमान् था। वह बात की बात में सारी बाते समझ गया। उसने कहा मित्र! सुनो! यह दंतपुर नरेश कर्णदेव महाराज की पद्मावती नामक कन्या है और आप में अनुरागवती है। यह सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ मित्र सहित उस कन्या के नगर में जा पहुँचा।

वहाँ पर अपने मित्र के साथ वह एक माली के घर पर ठहरा। मंत्रीपुत्र ने सारी बात का पता लगाकर और मालिन को कुछ लोभ देकर उसे अपना संदेश राजकुमारी तक पहुँचा देने के लिये राजी कर लिया। मालिन उनका संदेश लेकर राजकुमारी के पास पहुँची और मौका पाकर उसने उससे कहा, राजकुमारी जिस मनुष्य को तुमने तालाब के तीर पर देखा था वह यहाँ आ गया है। यह सुनकर राजकुमारी बड़ी क्रोधित हुई और उसने मालिन के सिर पर चन्दन से भरा हाथ का पंजा मार दिया, वह बिलबिलाती हुई अपने घर पहुँची।

उसने यह सारी घटना राजकुमार से कह सुनाई। राजकुमार बड़ा लज्जित हुआ और उसने मित्र से कहा, मित्र! क्या यही तुम्हारा बुद्धि बल है? मित्र ने उत्तर दिया, घबराओ नहीं। राज-कन्या ने जो मालिन के सिर पर चंदन से भरे हाथ का पंजा मारा है उससे साफ प्रकट है कि उसने शुक्ल पक्ष की पंचमी को तुम्हें वहाँ आने का निमंत्रण दिया है। तुम किसी बात की चिन्ता मत करो, और अपनी आत्मा में किसी प्रकार की उथल पुथल मत मचने दो।

मित्र की बातें सुनकर राजकुमार को कुछ धीरज हुआ, और अब वे दोनों किराये पर मकान लेकर अलग रहने लगे। शुक्ल पक्ष की पंचमी को वह मालिन फिर धन लोभ से विवश कर वहाँ भेजी गई। उसने भी वहाँ जाकर राजकुमार के लिये मार्ग पूछा। यह सुनकर राजकुमारी क्रोध से तमतमा उठी और कुंकुम भरे हाथ से उसका गला पकड़कर उसे धकेल दिया। फिर सखियों से बोली, सखियों! यह बार बार मेरा अपमान करती है इसलिये महल की छत से इसको रस्सी से लटका कर छोड़ दो। बस हुक्म की देर थी। सखियों ने फौरन उसको रस्सी से बाँध कर छत से नीचे लटका दिया, और उसे छोड़ दिया।

बेचारी मालिन ने फिर अपनी दुःख भरी कहानी कुमार से कह सुनाई और कहा कि बस मैं जीवित लौट आई इसी में मैं अपना अहो भाग्य समझती हूँ। मालिन के वचन सुनकर मित्र ने राजकुमार को समझाया कि आप शीघ्रता मत कीजियें, आपके काम में अभी विलम्ब है। लाल कुंकुम की चार-चार अंगुलियों के निशान जो इस की गर्दन पर मौजूद हैं वे इस बात के द्योतक हैं कि अभी वह राजकुमारी रजस्वला है, और उसने चार दिन और प्रतीक्षा करने का संकेत किया है। रस्सी का प्रयोग करके तुम्हें भी रस्सी द्वारा ऊपर आने का संकेत किया है। अतः हम नवमी की रात को उसी मार्ग से चलेंगे।

राजकुमार ने वे चार दिन प्रिया-मिलन की उत्कण्ठा में किसी तरह बिताये। आखिर नवमी आ पहुँची। रात्रि में राजकुमार संकेत स्थान पर जाकर खड़ा हो गया। उसको वहाँ वैसी हालत में आया देख राजकुमारी बड़ी प्रसन्न हुई। बात की बात में उसने राजकुमार को ऊपर चढ़ा लिया और रात भर उसके साथ पारस्परिक प्रेम गोष्ठी की। उस समय उसने राजकुमार

से पूछा कि स्वामिन् आपने मेरे हृदय में छिपे हुए भावों को किस प्रकार जाना। राजकुमार जरूरत से ज्यादा भोला था। उसने भोलेपन से सच सच कह दिया कि ये सभी बातें मुझे अपने मित्र से मालूम हुई हैं।

यह सुनकर उसने अपने मन में मंत्री पुत्र को मार डालने को सोचा मगर राजकुमार के सामने उसने ये भाव किसी भी इंगित या चेष्टा द्वारा प्रगट न होने दिये उसने राजकुमार को तरह तरह के पकवानों से खूब धपाकर भोजन कराया और कुछ जहरीले लड्डू उसे देकर कहा कि मेरे देवर को ये अवश्य दे देना। इसके बाद वे दोनों अपनी अपनी चिर संचित उमंगों को पूरी करने लग गये। राजकुमारी ने दूसरे दिन फिर आने की प्रतिज्ञा करा कर राजकुमार को विदा किया।

राजकुमार लड्डू लिये अपने निवास-स्थान पर पहुँचा। उसने वे लड्डू सुबुद्धि को दे दिये सुबुद्धि ने अपनी भाभी का दिया हुआ उपहार मानकर उन्हें बिना किसी हिचकिचाहट के ग्रहण कर लिये। राजकुमार ने वहाँ की सारी बातें कह सुनाई। सुबुद्धि ने उससे कहा कि तुमने वहाँ पर मेरा नाम फिजूल ही लिया। वार्तालाप समाप्त होने पर दोनों उठ खड़े हुए। प्रातःकाल हुआ ही चाहता था, अतः वे दोनों शौचादि से निवृत्त होने के लिये चले गये।

सुबुद्धि मंत्री पुत्र जब शौचादि से निवृत्त होकर आया तो उसने अपने लड्डुओं पर बैठी हुई मक्खियों को मरा पाया। उसे यह निश्चित हो गया कि ये लड्डू विषैले हैं अतः उसने उनको पृथ्वी में गाड़ दिया। जब राजकुमार आया तो उसने उसे इस बात से सूचित कर दिया। यह सुनकर वह दंग रह गया। सुबुद्धि ने उसे कहा कि आज रात्रि में जब तुम वहां जाओ तब तुम मेरे कथनानुसार कार्य करना। उसने मित्र के कथन को बिना किसी बाधा के स्वीकार कर लिया।

दोनों मित्र भोजनादि से निवृत्त हो, सायंकालीन कृत्यों में जुट गये। अंधेरा बढ़ने लगा राजकुमार संकेतानुसार राज महल में पहुँच गया। रात के तीन प्रहर आमोद-प्रमोद में बिता दिये। राजकुमारी को नींद ने आ घेरा। वह सो गई। कुमार ने दोस्त के कहे अनुसार उसकी जंघा पर तीन रेखाएँ खींच दी, और उसके पैर का पायजेब-झांझर निकाल कर चुप-चाप अपनी जगह पर लौट आया।

कुमार ने उस झाझर को अपने मित्र सुबुद्धि के हाथ दे दिया। बाद में दोनों ने योगी का रूप बना कर शमशान में जाकर डेरा डाल दिया। सुबुद्धि

गुरु बना और राजकुमार शिष्य हुआ। गुरु की आज्ञा से शिष्य पायजेब लेकर बाजार में बेचने को गया। एक सर्राफ से कहा कि इसके बदले में मुझे धन दे दो।

इधर राजकुमारी के पायजेब चोरी जाने की चर्चा सारे शहर में बिजली के वेग से फैल चुकी थी। उस सर्राफ ने उस योगी-वेश-धारी कुमार को पायजेब समेत राजा के पास पकड़ पहुँचाया। राजा ने अपना नाम देखकर उसे पहचान लिया। राजा का क्रोध भड़क उठा। उसने योगी से पूछा, जल्दी बताओ यह नुपुर तुम्हारे हाथ कैसे लगा? योगी ने कहा राजन्! इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता हूँ। इस बात का पता केवल मेरे गुरुजी को हो सकता है।

योगी के ऐसा कहने पर राजा ने सिपाही भेज कर गुरु को भी सख्ती से बुला लिया। गुरुजी आकर उपस्थित हुए। उन्होंने कहा महाराज! जब मैं आज शमशान में ध्यान जमाये बैठा था, तभी वहां पर एक प्लेग की भयंकर देवी आई। मुझे देख वह शहर की तरफ लौटने लगी। मैंने उसके पैर पकड़ लिये। उसे रोकने की कोशिश करते हुए उसके पैर का पायजेब–नुपुर मेरे हाथ आ गया। उसकी जांघ पर मेरे हाथ से कुछ रेखायें भी पड़ गई।

इस बात से शंकित-मनवाले राजा ने रानी से अपनी लड़की का परीक्षण कराया। योगी के कहे मुताबिक राजकुमारी की जांघ पर रेखाओं को पाकर, राजा चिंता करने लगा कि अब क्या हो? उसने योगी से कहा महात्मन्! आपका कहना सोलहों आने सच है। क्या यह ठीक भी हो सकती है? योगी ने कहा, जरूर। पर राजकुमारी को मेरे द्वारा अभिमन्त्रित वस्त्र पहिना कर, आंखों पर पट्टी बांध कर हाथ पैर रस्सी से कस कर मन्त्री लोग रथ में बिठा कर नगर के बाहर कुछ दूर जंगल में ले जाकर छोड़ दें। रथ वाले लोग पीछे घूम-कर न देखें। वह शक्ति-दोष से मुक्त हो जायगी। बाद में आप लोग बड़े भारी उत्सव के साथ अपने राजमहल में उसे वापस ले आना। राजाने योगी के कथनानुसार उसी हालत में उसे जंगल में छोड़ दिया।

इधर वे दोनों मित्र भी अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर वहां जा पहुँचे, और उसके बंधनों को काट, जंगल से अपने नगर की तरफ ले चले। रास्ते में राजकुमारी ने कहा कि—क्या ये सब करतूतें देवर-महोदय की हैं? तब सुबुद्धि ने कहा, नहीं—ये सब करतूतें भाभी–रानी की हैं।

इधर आठ प्रहर का समय बीत जाने पर राजा स्वयं जंगल में गया। वहां उसे राजकुमारी पद्मावती न मिली। इस दुःख से राजा का हृदय फट गया। अब बताओ यह पाप कन्या को, राजकुमार को, या मित्र सुबुद्धि को इनमें से किस को लगा?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कुमार ने कहा। मृतक! मेरी समझ में तो राजा को ही लगा। कारण, कि उसने इतनी बड़ी कन्या को क्वाँरी ही क्यों रखी? दूसरे प्रकार से चारों व्यक्ति पाप के भागी हैं। कुमार के ऐसा कहते ही मृतक उसके हाथ से छिटक कर फिर बड़ में जा टंगा।

इस प्रकार कुमार के भाषण से मुरदे ने तीनबार ऐसा लिया परन्तु कुमार ने भी हिम्मत न हारी और चौथीबार शब को बड़ से उतार ही लाया। मजबूती से पकड़ कर ज्यों ही वह आगे बढ़ता है, त्योंही शव ने कहना शुरु किया—

कुमार! राज-राजेश्वर होकर भी न मालूम क्यों इस योगी के चक्कर में फंस रहे हो? योगी बड़ा दुष्ट है। कपटी है। तुमसे वह अपनी साधना सिद्ध करना चाहता है। मैं तुम्हें सचेत कर देता हूँ कि -कुमार! अनजान में कहीं धोखा मत खा जाना।

मुरदे के वचन को सुनकर कुमार विचार में पड़ गया और सोचने लगा कि यह क्या कह रहा है? इतने में वहां एक मध्यम अवस्था वाली स्त्री आई। कुमार ने पूछा तू कौन हैं? तो उसने आंखों में आंसू भरकर लम्बी-लम्बी सांस लेते हुए कहा—

इस स्थान से दक्षिण की ओर नन्दगांव में मेरा निवास है। यह फांसी में लगा हुआ मेरा पति है निर्धन होने के कारण यह चोरियां करता था। एक दिन पकड़ा गया, राजा ने इसे फाँसी की सजा दे दी। लोगों के मुंह से मालूम होने पर पति-मुख-दर्शन के लिये मैं आई हूँ। तुम इसे इस प्रकार पकड़कर क्या करना चाहते हो?

उत्तर देते हुए कुमार ने कहा। शुभे! इसे मैं शमशान में ले जा रहा हूँ। तब उसने कहा हे महापुरुष! मुझे मेरे पति से अन्तिम प्यार कर लेने दो। कुमार ने कहा, जो चाहो सो कर लो। इस पर वह स्त्री चन्दन आदि से मुरदे को लेप करने लगी। इतने में मुरदे ने उसकी नाक काट ली। वह रोती चिल्लाती अपने गांव की ओर चली गई।

कुमार ने मुरदे को लाकर योगी के पास रक्खा। शव को स्नान कराकर पुष्पादि से पूजा आदि करके कुंड के सामने बनाये मण्डल में सुला दिया। योगी स्वयं उसके सामने मुंह करके उसके सिर के पास बैठ गया। कुमार को मुरदे के पैरों की तरफ पीठ करके बिठलाकर बोला हे धीर पुरुष! मैं अपनी साधना का कार्य प्रारम्भ कर रहा हूँ। तुम पीछे की ओर मत देखना।

कुमार अपनी अंग-रक्षा करके मजबूती से बैठ गया। योगी ने मन्त्र द्वारा १०८ चावलों को अभिमंत्रित करके मृतक पर फैंके। मृतक मंत्र-देवता के प्रभाव से कुछ उठा, पर गिर गया। कुमार तिरछी निगाह से यह सारा खेल देख रहा था। योगी ने फिर पहले की तरह अभिमंत्रित चावल मृतक पर डाले। पहिले की ही तरह कुछ उठ कर वह मुरदा फिर गिर गया।

योगी ने कुमार से कहा मित्र! तुम किस विचार में डूबे हुए हो। तुम तो इस बात का ध्यान रक्खो कि योगी की साधना सिद्ध हो जाय। इस पर कुमारने कहा–जिन के मन वचन और कर्मों में एकता होती है उन्हीं की साधना सिद्ध होती है। तुम तन्मय होकर साधना करते जाओ। मैं सावधान हूँ।

इसके बाद योगी ने उसी विधान को तीसरी बार फिर किया। मगर मृतक में नाक की नोक का शल्य है, यह वह न जान सका। तब मंत्र का देवता उस मुरदे में प्रकट होकर क्रोध से फुफकारता हुआ, शल्य को बाहर फेंककर योगी से बोला—

अरे दुष्ट! तूंने मुझे इस शल्य-युक्त-शव में उतारा, और इस सीधेसादे कुमार को भी तूने ठगा है। देख! साधना कभी व्यर्थ नहीं जाती, अतः जा! इसकी जगह आज तू ही बली का बकरा बन। ऐसा कहते हुए उस शवाधिष्ठित-देवने योगी को उठाकर जलते हुए अग्निकुण्ड में झोंक दिया। कुमार हा! हा!! करता ही रह गया। योगी आग में पड़कर सोने का पुतला बन गया।

कुमार ने अपने साधक की रक्षा न कर सकने से पश्चाताप किया। बाद आग के शांत हो जाने पर उस स्वर्ण-पुतले को बाहर निकाला और जमीन में गाड़ दिया। सुबह वह अपनी स्त्री से जा मिला। उसे अंजन योग द्वारा बंदरी से मानुषी बना दिया। फिर रात की सारी घटना कह सुनाई।

मदन सुंदरी ने विस्मित होकर पति से पूछा देव! इस सुवर्ण-पुतले का क्या प्रभाव है? कुमार ने कहा प्रिये! इसकी पूजा करके चारों अंग काट लिया

जायँ, और रात को ढक रखने से दूसरे दिन यह फिर तैयार-पूर्णांग हो जाता है। इस प्रकार जिसके पास यह सुवर्ण पुरुष हो वह धनवान हो जाता है, पर मेरा मन इसमें जरा भी रुचि नहीं रखता—क्योंकि इसके भोग-उपभोग से पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण-व्रत का एक तरह से खंडन हो जाता है। अतः दयालु पुरुषों के योग्य यह सुवर्ण-पुरुष नहीं है।

परस्पर में बातचीन करते करते प्रसन्न-मन दोनों पति-पत्नी आगे बढ़ते गये।

जहाँ सिंह दहाड़ते हैं। हाथी चिंघाड़ते हैं। रींछ और बंदर किलकारियां मार रहे हैं। बारासिंगे, हिरण, खरगोश सूअर इधर से उधर किलोल करते हुए स्वतंत्रता का आनन्द लूंट रहे हैं। ऊबड़ खाबड़ जमीन में रास्ते ऊंचे नीचे सांप की तरह निकल रहे हैं। आम नीम जामून बड़ पीपल, इमली, बांवल सागून पलास महुए आदि के पेड़ अपनी आड़ में छाया में आश्रितों की रक्षा करते हुए परोपकार का पाठ जगत को मूक भाव से पढ़ा रहे हैं। ऐसा विन्ध्याचल का पहाड़ गंभीर योगी के समान समाधि में लीन हुआ खड़ा है। कहीं कहीं उसमें सुधा-मधुर शीतल जल के झरणे भी झर रहे हैं।

सूर्य की बाल किरणें कुमकुम बखेर रही है। उस समय विन्ध्याचल की आभा अनन्त गुणी उल्लसित हो रही थी ऐसे ही प्रसंग में वीर शिरोमणि कुमार श्रीचन्द्र अपनी प्रियतमा मदन सुन्दरी को साथ लिये धीर गंभीर चाल से चलता हुआ उस पहाड़ी भूमि को पार कर रहा था। उस समय वहां एक स्तुति पाठक विदेशी कवि मौज में गाता हुआ जा रहा था, वह भी उनके साथ हो लिया, और सब को श्रीचन्द्र की यशो-गाथायें सुनाने लगा!

जयतु कुशस्थल पुर नगर, प्रताप सिंह भूपाल।
सूर्यवती सुत जयतु जग, सिरि सिरि चन्द कृपाल।।
राधा-वेधी निस्पृही, सुरतरु सम दातार।
पर नारी के बन्धुवर, जय सिरिचन्द्र कुमार।।
शून्य नगर कुण्डलपुरे, राक्षस मानी हार।
नया बसाया चन्द्रपुर, जयसिरि चन्द कुमार।।
परणी छोड़ी पदमणी, चन्द्रकला वरनार।
लक्ष्मीदत्त पालित सुतन, जय सिरिचन्द्र कुमार।।
विद्याधर विजयी हुए, जो चोरों का काल।
बुद्धि सुलोचन वैद्यवर, जय सिरि चन्द दयाल।।

श्रीचन्द्र ने कहा कविराज! कहां से आ रहे हो? बन्दी ने कहा देव! मैं कुण्डलपुर से आया हूँ। वीणापुर जाता हूं। कुमार ने उसे भारी पारितोषिक दिया। मदन सुंदरी ने कहा आपने अपना चरित्र नहीं सुनाया तो क्या हुआ। आज मैंने तो सुन ही लिया। कुमार ने कहा प्रियें! तुम अत्यन्त भोली दीखती हो। इस पृथ्वी में श्रीचन्द्र नाम वाले अनेकों व्यक्ति हैं। जिस किसी की प्रशंसा में मुझे ही वह मान लेना ठीक नहीं होता। मदनसुन्दरी ने कहा रहने भी दीजियें, इन बातों में क्या रक्खा है? क्या आप मुझे पागल ही समझ रहे हैं? क्या अब भी आप गुप्त रहने की ही चेष्टा करते रहेंगे? अपनी प्रियतमा की तिरछी चितवन के साथ कही हुई इस बात का उत्तर कुमार ने हंस कर ही दिया।

वीणापुर के मार्ग में जाते हुए एक राजकीय अधिकारी ने कुमार के पास चन्द्रहास खड्‌ग और चन्द्रमुखी ललना को देखकर ललचाये हुए भावों से कहा कि- जरा दीजियें तो, देखु, आप की तलवार कैसी है? यह सुन कुमार ने कहा महाशय जी! आप अपनी तलवार सम्हाल लें फिर मेरी तलवार का जौहर देखना।

फुर्तीले और बहादुरी भरे उसके वचन सुनकर वह जल भुन गया। वह जाकर अपने साथियों को बहका लाया। वे लोग मारो पकड़ो। बांध लो। अरे तलवार और स्त्री के चोर! अब तू भाग कर कहां जायगा? अब तो तू मरा ही समझ ले। इस प्रकार चिल्लपों मचाता हुआ उन उदण्ड आदिमियों का टोला कुमार के पास आ पहुंचा।

कुमार श्रीचन्द्र पहिले से ही तैयार था वह सिंह की तरह गरज कर उन पर टूट पड़ा। कई मारे गये। कई अधमरे हो गये। कइयों के अंग उपांग कट गये। बाकी के बचे हुए भाग खड़े हुए। भागते हुए वे लोग कहते जाते थे बाप रे! मार दिये। मरवा दिये, इस पापी ने यह तो कोई विद्याधर है। नाहक इससे हमें भिड़ा दिया।

राज-कुमारी मदना अपने पति के सिंहनाद को, तलवार के हाथों को, और विरोधियों की तादाद को देखकर बहुत खुश हुई। उसमें भी वीर रस भर गया उसे वीरपत्नी होने का गौरव मालुम हुआ।

उस विरोधी टोले के भाग जाने पर अपनी प्रियतमा मदना से प्रसन्नता की बातें करता हुआ कुमार पहाड़ में ऊबड़ खाबड़ और टेढ़े-मेढ़े मार्गों से

कभी धीरे और कभी तेजी से चलता हुआ सिद्धपुर नगर में जा पहुँचा। वहाँ तीर्थभूत एक विशाल श्री जिन मन्दिर के दर्शन किये। वहां के प्रभाव से प्रेरित हो दूर-दूर से लोग भगवान् श्री आदिदेव के दर्शन के लिए आते थे। वस्त्र अक्षत फलादिकों से अनेक प्रकार की पूजाएँ रचाई जातीं थीं। वहां के निवासी बनिये लोग भगवान् की पूजा में चढाये हुए द्रव्य को आपस में बांट लेते थे। देव-द्रव्य का उपभोग करने से वे लोग निर्धन, सन्तति-हीन, निस्तेज दिखाई देते थे। खानदान के खानदान तबाह हो रहे थे। संख्या दिन व दिन घट रही थी। फिर भी वे अपनी इस आदत से बाज नहीं आ रहे थे।

मदना और कुमार ने बड़े ही भक्तिभाव से जिनवंदना और जिन-पूजा की। बाहर निकलकर कुमार ने मदना से कहा–सुनती हो! यह नगर अपने अन्न जल लेने के योग्य नहीं है, क्योंकि यहां के सब लोग देव द्रव्य को खाने वाले हैं। यहां किसी का आतिथ्य स्वीकार न करना ही हमारे लिये श्रेयस्कर हैं।

कुमार ने वहां उपस्थित बूढ़े मनुष्यों से पूछा कि देव-द्रव्य खाने में आपको ग्लानि नहीं होती? देव-द्रव्य ग्रहण करने की शास्त्रों में आज्ञा नहीं है। कहा है :—

जिण दव्वं भक्खंतो, अणंत संसारिओ होइ।
भक्खणो देव दव्वस्स, परित्थी-गमणेण य।
सत्तमं नरयं जंति, सत्तवारा उगोयमा!।।
देवद्रव्येण या वृद्धि-स्तेन द्रव्येण यद्धनम्।
दद्धनं कुल-नाशाय, मृतोऽपि नरकं व्रजेत्।।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan

Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653
Fax : 2271-2151,

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

CALTRONIX
12 India Exchange Place
3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.

Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020

Ph:(011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,

Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra

Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

—आत्मा की स्वतन्त्रता—

कर्म के नियम में दया नहीं प्रभु की कृपा का उसमें प्रवेश नहीं। यदि होता तो कर्मों की अटलता नहीं कही जा सकती। जैसा कर्म वैसा फल इस सनातन सत्य को भूलकर मनुष्य बहुधा किसी कल्पित सत्ता के आगे अपने कर्त्तव्य के फल को बदलने की प्रार्थना करता है। जैसे-प्रभो! हमें यह दो, वह दो। प्रभु ने ऐसा किसी स्थान पर नहीं कहा कि तुम मेरी प्रार्थना करोगे तो मैं तुम्हारे किये हुए अयोग्य कर्म फल से तुम्हें छुड़ा दूंगा। प्रभु ने तो अच्छी तरह बतलाया है कि तुम्हारी आत्मा ही सुख-दुःख, नरक स्वर्ग, भव या मोक्ष का कर्त्ता है।

यदि सुख-दुःख देने की शक्ति प्रभु के हाथ होती तो वे (प्रभु) ऐसी आज्ञा देते कि भाइयो! तुम अपनी इच्छानुसार कर्म करते जाओ परन्तु जिस समय तुम मेरी प्रार्थना करोगे तब मैं उस प्रार्थना से प्रसन्न होकर तुमको उत्तम और मुंह मांगा फल दे दूंगा।

उस महाप्रभु ने यह बताया है कि यदि तुमको उत्तम फल की इच्छा हो तो अच्छे कार्य (कर्म) करते जाओ। मनुष्य को सदा यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिये कि मुझे सुख-दुःख देने वाला दूसरा नहीं पर मैं आप ही हूँ। मेरे अयोग्य कर्म के बिना कोई दूसरा मेरा एक बाल भी बांका नहीं कर सकता। इस निश्चय ही में मनुष्य का आत्म बल रहता है।

इस कारण से ही प्रभु महावीर ने आत्मसत्ता को सिद्ध समान अनन्त शक्तिशाली कहा है।

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

SSRM/KOL/RMS/WBRNP-070/2004-06
VoL. XXVII. NO. 11. TITTHAYARA February 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225